



ज्ञानांजली

वार्षिक पत्रिका
2023-24



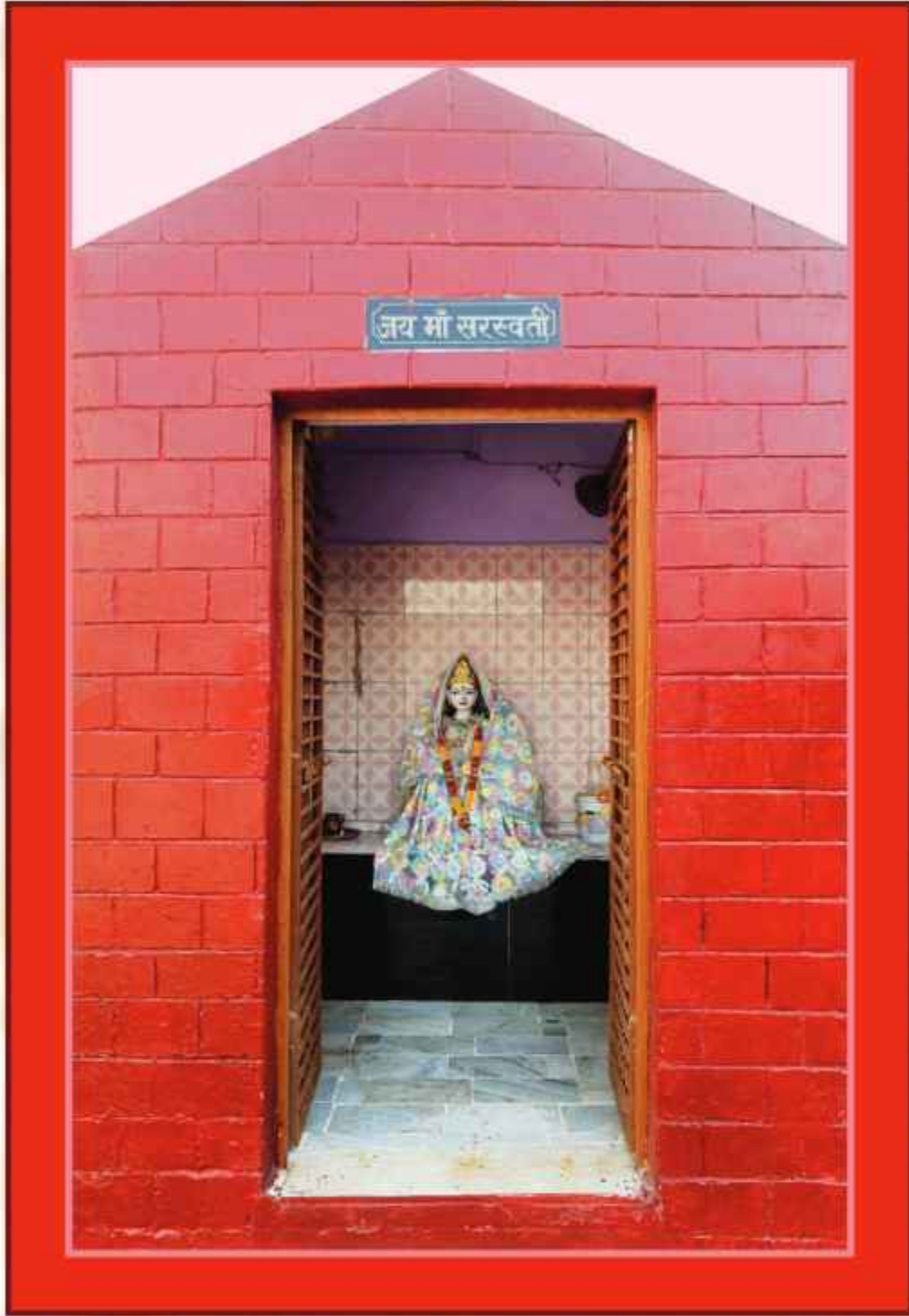
सी. एल. जैन कॉलेज

(समबद्ध डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, यूनिवर्सिटी, आगरा)

आगरा रोड, सुहाग नगर, फिरोजाबाद



www.cljaincollege.org.in



ॐ सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारंभ करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

स्थापना वर्ष – 1959



ज्ञानांगली


वार्षिक पत्रिका

2023-24

सी. एल. जैन कॉलेज

(सम्बद्ध डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, यूनिवर्सिटी, आगरा)

आगरा रोड, सुहाग नगर, फिरोजाबाद

 www.cljaincollege.org.in



श्री महावीर जैन
अध्यक्ष



श्री प्रवीन कुमार भटनागर
सचिव

प्रबन्ध समिति (सी.एल. जैन महाविद्यालय, फिरोजाबाद)

- | | | | |
|-----|-----------------------------------|---|--|
| 1. | श्री महावीर जैन | : | अध्यक्ष |
| 2. | श्री के. राजीव गुप्ता | : | उपाध्यक्ष |
| 3. | श्री प्रवीन कुमार भटनागर | : | सचिव |
| 4. | श्री एस.सी. सिंह | : | सदस्य |
| 5. | श्री सम्भव प्रकाश जैन | : | सदस्य |
| 6. | श्री संजय जैन | : | सदस्य |
| 7. | श्री रोहित जैन | : | सदस्य |
| 8. | श्रीमती सरोज | : | सदस्य |
| 9. | प्रो. डा. वैभव जैन (प्राचार्य) | : | पदेन सदस्य |
| 10. | (शिक्षक प्रतिनिधि) | : | चक्रानुसार वरिष्ठता क्रम के एक वर्ष की अवधि हेतु |
| 11. | " " " " " | : | " " " " |
| 12. | (तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि) | : | चक्रानुसार वरिष्ठता क्रम के एक वर्ष की अवधि हेतु |

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	शुभकामना संदेश : डॉ. राजेश कुमार - क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, आगरा- अलीगढ़ मण्डल, आगरा : श्री महावीर जैन - अध्यक्ष - प्रबन्ध समिति : श्री प्रवीन कुमार भटनागर - सचिव प्रबन्ध समिति : डॉ. अनिल कुमार यादव - पूर्व सचिव प्रबन्ध समिति : प्रोफेसर (डॉ.) वैभव जैन - प्राचार्य	1-5
2.	सम्पादक मण्डल	6
3.	महाविद्यालय के जनक	7-8
4.	महाविद्यालय के प्रेरणास्त्रोत	9
5.	महाविद्यालय का परिचय	10-11
6.	सत्र 2023-24 में वर्षवार कार्यक्रम	12
7.	रेंजर-रोवर - डॉ. श्रीमती रश्मि जिंदल	15-16
8.	National Service Scheme - Ms. Pooja Tyagi	21
9.	National Cadet Corps	22-23
10.	महाविद्यालय में डिग्री वितरण	24
11.	आपदा प्रबंधन- प्रोफेसर (डॉ.) वैभव जैन प्राचार्य	27-29
12.	Roll of Digital Marketing In Modern Bussiness Era - Dr. Arun Kumar Yadav	30
13.	कम्प्यूटरीकृत लेखांकन वातावरण - डॉ. अरुण कुमार यादव	31-32
14.	एकाग्रता से लक्ष्यों की ऊँचाई तक - शिवानी गोयल	33
15.	Radioactivity - Dr. Hemlata Yadav	34-35
16.	मिसाइल मैत्र - डॉ. प्रदीप जैन	35
17.	विद्यार्थी जीवन-उमेश कुमार	36
18.	अहमद का सपना - शाहरुख हुसैन	37
19.	अतिरिक्त कक्ष - दीपक कुमार	38-39
20.	संसार के महान विद्वान (डॉ. भीमराव अम्बेडकर) - दिलीप कुमार	40
21.	अभ्यास का महत्व - कुलदीप	40-41
22.	मुश्किलें- आकाश कुमार	41-42
23.	आज की नारी- तृप्ति पाराशर	42
23.	हौंसला- ललितेश कुमार	43
24.	गुरु शिष्य- रैनू	43
25.	सघर्ष- विनीत कुमार	44
26.	गजल- अंकित कुमार	44
27.	सही दिशा- खुशी शर्मा	45
28.	कुछ सुविचार- रुचि	45
29.	स्कूल- अद्विक दुबे	46
30.	मेहनत- विशाल शर्मा	46
31.	पशु- सुरक्षा- नेहा बृजमोहन	47
32.	शिक्षक का अर्थ- नेहा गुप्ता	47
33.	एक रीति ऐसी भी- संदली शर्मा	48
34.	संगति का असर-मुकेश	48



अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
35.	बेरोजगारी -समस्या से समाधान तक- अभय कुमार सिंह	49
36.	शिक्षक- आशीष यादव	50
37.	माँ तू है तो हम हैं- आयुश मैरोठिया	50
38.	पिता पर खुबसूरत कविता - आशीष झा	51
39.	जीवन जीना है तो ऐसे जियो-संदली शर्मा	51
40.	Binary Thinking - Saurav Pachaury	52
41.	मेहनत- अलशिफा	52
42.	कभी खुद से भी थोड़ी बात करो- श्रष्टि गुप्ता	53
43.	जीवन से लड़ाई- हिमांशी कुशवाह	53
44.	शहीद जवानों के लिए कुछ वाक्य- आशी उपाध्याय	54
45.	बेटियाँ- अंजली	54
46.	संतुष्टता ही जीवन- खुशी शर्मा	55
47.	हम हिंदी बोलने से शर्माते हैं- गुलशन कुमार	55
48.	आत्म-अनुशासन- अमन वर्मा	56
49.	राघवेन्द्र चरित व प्रकृति का- श्रद्धा उपाध्याय	57
50.	The Power Of One- Princy Parashar	58
51.	My Aim In Life- Km. Alisha	58
52.	विभिन्न समितियों की आख्या	59-64
	(a) महिला उत्पीड़न समिति	
	(b) पुस्तकालय व वाचनालय समिति	
	(c) निर्धन छात्र सहायता समिति	
	(d) छात्रवृत्ति समिति	
	(e) IQAC	
	(f) अनुशासन एवं रैगिंग विरोधी समिति	
	(g) भारतीय संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ	
	(h) AISHE समिति	
	(i) संस्थागत विकास योजना प्रकोष्ठ	
	(j) उद्योग अकादमिक एकीकरण एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ	
	(k) NAAC समिति	
	(l) लघु निर्माण एवं भवन अनुसरण समिति तथा विद्युत समिति	
53.	विभिन्न विभागों की प्रगति रिपोर्ट	64-68
	(a) रसायन विज्ञान विभाग	
	(b) भौतिक विज्ञान विभाग	
	(c) जन्तु विज्ञान विभाग	
	(d) वनस्पति विज्ञान विभाग	
	(e) Commerce Department	
	(f) Computer Science Department	
	(g) Mathematics Department	
54.	महाविद्यालय का शिक्षक मण्डल	69-70
55.	महाविद्यालय का शिक्षणेत्र मण्डल	70





डॉ. राजेश प्रकाश
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
आगरा

अर्द्ध-शा.प.सं. : क्षे.का.आ./मेमो
दिनांक :

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि सी.एल.जैन कॉलेज फिरोजाबाद अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञानान्जली' सत्र 2023-24 प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका में प्रकाशित सारगर्भित एवं प्रेरक रचनाओं के समावेश से छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास में सृजनशीलता एवं कर्तव्यपरायणता की भावना को विकसित करने में सहायक होगी।

मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रवक्ताओं एवं छात्र-छात्राओं को वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन की हार्दिक बधाईयां देता हूँ तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित...

(डॉ. राजेश प्रकाश)

प्रतिष्ठा में,

डॉ. वैभव जैन
प्राचार्य
सी.एल. जैन (पी.जी.) कॉलेज
फिरोजाबाद



Message



It is a matter of pride that the college magazine committee has put their best effort in bringing out the magazine for the academic year 2023-24. The magazine, I feel will mirror the creative and innovative sides of both the teachers and the students. The articles published in it, I hope will be contemporary relevance. I congratulate the convener and the committee member on having successfully crafted out the magazine in a very creative way.

Sincerely



Mahavir Jain

President

(Management Committee)

C.L. Jain (P.G.) College, Firozabad



Message



As the Manager of the management committee I extend my heartfelt congratulations to the entire team involved in the publication of esteemed college magazine. The dedication and hard work of editorial team has culminated in this remarkable achievement, and I am proud of this successful publication of magazine. This magazine serves as a valuable platform for students to showcase their talent, creativity and diverse perspectives. It is a testament to the vibrant intellectual and cultural life of our college, and I commend the team for fostering such a dynamic work.

I extend my best wishes for the continued success of the magazine. May it continue to inspire and inform readers and may it serve as a lasting legacy of the achievements of your college community.



Yours' Sincerely

Praveen Kumar Bhatnagar

L.L.M., Advocate

Manager of Management Committee

(Secretary - Prabandh Samiti)

C.L. Jain (P.G.) College, Firozabad



Message



I am very happy to know that the college magazine Gyananjali is being published by C.L. Jain, Post Graduate College, Firozabad. Such Magazines play an important role in developing expression skills among students. The original works of creative professors and students of the college should be published on priority in this magazine.

Through the magazine, information about the academic activities and specialities of the college also reaches the people, publishing own.



Dr. Anil Kumar Yadav

Ex-Secretary

Management Committee

C.L. Jain (P.G.) College, Firozabad



Message



I am elated at the publication of college magazine for the academic year 2023-24. Since the beginning of this session with the help and hard work of my enthesiastic colleagues, college infrastructure and environment are improved drastically.

Pariticipation of students in cultural events, games etc. is a tool to improve their personality. Which reflects in their behaviour and increase their confidence level.

I welcomes first year students and give blessings final year students for their future bright carrier.

I also assure that in coming years our college will rise and shine more. I also congratulates the cheif editor Dr. (Smt.) Rashmi Jindal and other editors for their efforts to summarise the whole year events happened in college in excellent manner.



Prof. Dr. Vaibhav Jain

Principal

C.L. Jain (P.G.) College, Firozabad



EDITORIAL



The Editorial

The college which was started from 1959 by the Late Shri Chaddami Lal Ji Jain, a great philanthropist, has gradually Today, the college has unique post graduate chemistry and mathematics in science stream in a city Firozabad. The college today's in an educational Edifice of excellence with its most talented and experienced staff and state of the art infrastructure offering a variety of courses in Science and commerce both at UG and PG level. it is a matter pride that many of our former students have secure good job both in india and abroad.

The magazine committee is glad to note that many of the teachers and the students have evinced interest in the magazine by contributing creatively and interesting literacy, science and commerce items in Hindi and English. This issue is a treasure poem, stories beautiful pictures and topics related to various branches of knowledge. The items not only mirror the creative talents of the contributors but also there analytical thinking. the committee deems in an honour to congratulate all of them.

We, the committee member express our deep sense of gratitude to Principal prof. (Dr.) Vaibhav Jain Sir for giving us and opportunity to bring out the magazine. We are also grateful to our correspondent Dr. Anil Yadav Ex-Secretary Sir, Sri Praveen Bhatnagar secretary Sir, Sri Mahaveer Jain President Sir for their constant encouragement and support in our endeavour to bring out the magazine.

We are also thankful to our colleagues for their cooperation. We strongly hope that the magazine will be received well by one and all

The Editorial Committee

Dr. (Smt.) Rashmi Jindal	(Chief Editor)
Dr. Arun Kumar Yadav	(Editor)
Dr. Hemlata Yadav	(Editor)
Ms. Shivani Goel	(Editor)
Dr. Kuber Singh	(Editor)
Dr. K. K. Singh	(Editor)

महाविद्यालय के जनक



स्व. सेठ छदामी लाल जी जैन
महाविद्यालय संस्थापक

छदामीलाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्थापक स्वर्गीय श्री सेठ छदामी लाल जैन जी का जन्म 12 जून सन् 1896 में पल्लीवाल दिगंबर जैन समाज में हुआ था। सेठ जी के पिताजी का नाम श्री मोतीलाल जी जैन और माता जी का नाम श्रीमती कुंदनबाई था। सेठ जी तीन भाई थे। श्री बाबूलाल जी जैन, श्री प्यारेलाल जी जैन व सेठ जी। सेठ जी अपने भाइयों में सबसे छोटे थे।

मात्र सात साल की अल्प आयु में सेठ जी अपने माता और पिता दोनों की छाया से वंचित हो चुके थे इस प्रकार उनका बचपन जल्दी समाप्त हो गया था। वह बचपन से ही बड़े मेहनती व स्वावलंबी प्रकृति के बन गए थे। सेठ जी ने अपने जीवन काल में बड़ी कठिनाइयों का सामना किया लेकिन कोई भी बाधा उनके तेज के सामने उनके उज्ज्वल भविष्य को रोक नहीं पायी। सेठ जी ने हर क्षेत्र में अपना नाम किया चाहे वह व्यापार का क्षेत्र हो, चाहे वह समाज का क्षेत्र हो या राजनीति या फिर कोई अन्य क्षेत्र। व्यापार के क्षेत्र में सेठ जी ने अपने मेहनत पर, अपने बल पर, अपने कठिन परिश्रम पर उन्होंने मोती प्राइवेट लिमिटेड के नाम से हिरनगांव में फैक्ट्री लगायी जिसमें उस समय दो हजार से भी ज्यादा मजदूर कार्य करते थे और तीन पालियों में कारखाना चलता था।

कठिन परिश्रम और ईमानदारी के बल पर सेठ जी को कांच उद्योग में सफलता मिलती गई। व्यापार दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा। धीरे-धीरे श्रम की सीढ़ियां चढ़ते चढ़ते सेठ जी ने दूसरा कारखाना भी लगाया और वह दो कारखानों के स्वामी होकर संपन्नता के शिखर तक पहुँच गए। "भारत का ग्लास किंग और एशिया नंबर दो के खिताब" उनके नाम के आगे जुड़ गए। यह सब उनकी सूझबूझ और पुरुषार्थ का कमाल था।

संपन्नता बढ़ने के साथ ही सरल स्वभाव के स्वामी थे। समय के साथ साथ जैसे-जैसे उनका व्यापारिक और औद्योगिक विकास हो रहा था। वैसे ही वैसे उनकी धार्मिक गतिविधियाँ भी विकसित हो रही थी। सन् 1947 में उन्होंने छदामीलाल जैन ट्रस्ट की स्थापना की। इस ट्रस्ट का उद्देश्य धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों को बढ़ाने का था। इस ट्रस्ट के अंतर्गत उन्होंने नौ संस्थाओं की स्थापना की।

1. श्री दिगंबर जैन महावीर जिनालय
2. श्री मोतीलाल जैन धर्मार्थ औषधालय
3. श्री मोतीलाल जैन पार्क
4. श्री गणेश प्रसाद वाणी स्वाध्याय कक्ष
5. श्री कानजी पुस्तकालय एवं वाचनालय
6. श्रीमती सरस्वती देवी दिगम्बर जैन धर्मशाला
7. श्री छदामी लाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय
8. श्री छदामी लाल जैन जूनियर स्कूल, हिरन गांव
9. श्री दिगंबर जैन चंद्रपाल पाठशाला, चंदवार

इस धनी परिवार के प्रबंधन में यह सभी संस्थाएं आज भी सुव्यवस्थित ढंग से संचालित हो रही हैं। और दान देने की



परंपरा को यथावत रखते हुए सेठ जी के पौत्र सेठ महावीर जैन जी ने वर्तमान में सेवार्थ संस्थान सेठ विमल कुमार जैन ट्रामा सेंटर को भी जमीन दान की।

सन् 1959 में जब सेठ जी को यह पता चला उनके नगर के विज्ञान वर्ग के मेधावी छात्र-छात्राएँ पढ़ने के लिए शहर से अन्य शहरों में जाते हैं तब उन्होंने छदामी लाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना की जिसमें सभी छात्र-छात्राओं को पढ़ने का मौका मिला और इस महाविद्यालय में पढ़ कर कई छात्र एवं छात्राएँ आज अच्छे मुकाम पर कायम हैं।

सेठ छदामीलाल जैन जी ने धार्मिक संस्थाओं के सुरुचिपूर्ण निर्माण के विचार में श्वेत धवल संगमरमर का भव्य “श्री महावीर जिनालय” का निर्माण कराया था।

सेठ जी ने एक बार स्थानीय राजनीति में भी प्रवेश किया था। फिरोजाबाद नगर पालिका के अध्यक्ष भी रहे किंतु स्वार्थी तत्व की दलबंदी भ्रष्टाचार और निरर्थक वाद-विवाद का अनुभव करने के बाद उन्होंने शीघ्र ही पद से त्यागपत्र दे दिया और सदैव के लिए राजनीति को त्याग दिया। सेठ जी ने हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन किया है। ऐसा महापुरुष शताब्दियों में एक बार जन्म लेता है।

13 जनवरी 1976 को दिगंबर जैन समाज का एक उज्ज्वल नक्षत्र अकस्मात् अस्त हो गया था। फिरोजाबाद अंचल के निस्पृह सेवक और उपकारी महामानव का जीवन दीप सदा के लिए बुझ गया। यह शताब्दी के अनुपम महापुरुष का दुखद अंत था।

बड़े आदमी दुनिया में बहुत मिलते हैं, परन्तु बड़प्पन सब में नहीं होता है। वह जिनमें होता है उन्हें खोकर मानवता कराह उठती है। उस दिन फिरोजाबाद में ऐसा ही हुआ था। सेठ छदामी लाल जैन जी अपनी तरह के अकेले महापुरुष थे। उनके विछोह पर यही विश्वास मन को बोध देता है कि उन्हें मार सके इतनी शक्ति मृत्यु में नहीं थी। वह मरे नहीं हैं मर नहीं सकते हैं। उनकी यश काया अमर है। वह उनके द्वारा रोपे गए लोकोपकार पौधों के रूप में फल फूल रही हैं। कई पीढ़ियों तक हमारी संतानों को उन महावृक्षों की छाया मिलती रहेगी। ऐसे अवसर पर हमें एक शेर याद आता है।

इस शहर में जब कोई साया न पाएगा
ये आखिरी दरख्त बहुत याद आएगा
उस आदम कद आदमी की स्मृतियों को लाखों प्रणाम।





स्व. सेठ विमल कुमार जैन
महाविद्यालय सहसंस्थापक

महाविद्यालय के प्रेरणास्रोत

छदामीलाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सह संस्थापक स्वर्गीय सेठ विमल कुमार जी जैन का जन्म 16 सितम्बर 1933 को फिरोजाबाद के दिगंबर जैन परिवार में हुआ था। सेठ विमल कुमार जी के पिता का नाम सेठ छदामी लाल जैन व माता का नाम श्रीमती शरबती जैन था। सेठ विमल कुमार जी अपने माता पिता के आज्ञाकारी पुत्र थे। एक पिता जो

योग्यताएँ अपने पुत्र में देखना चाहता है वह सब आप में विद्यमान थी। आधुनिक “श्रवण कुमार” की उपाधि ही आपके लिए उपयुक्त है। आपने सेठ जी की आज्ञा को सदा देव आज्ञा की तरह माना तथा उसे पूरा किया।

सेठ छदामीलाल जैन ने जो ट्रस्ट बनाया था तथा जो मंदिर का निर्माण शुरू किया था उसको सेठ विमल कुमार जैन जी के द्वारा पूर्ण किया गया।

श्रद्धेय, चिरस्मरणीय, सम्मानित श्री विमल कुमार जैन जी छदामी लाल जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अध्यक्ष पद पर सन 1959 से मृत्युपर्यन्त आसीन रहे। अपने इस कार्यकाल में आपने अथक परिश्रम त्याग, समर्पण, लग्न, पूर्णनिष्ठा एवं दृढ़ संकल्प शक्ति से महाविद्यालय को प्रगति के उच्चतम शिखर पर पहुँचाने में महती भूमिका का निर्वहन किया।

वे छात्र-छात्राओं के चहुँमुखी विकास के लिए सदैव चिंतित रहे जिसके परिणाम स्वरूप महाविद्यालय के पाठ्य सहगामी एवं पाठ्यत्तर क्रियाकलापों जैसे योग, स्वच्छ, सुंदर पर्यावरण एवं क्रीड़ा पर उनका विशेष आग्रह रहा।

इस महाविद्यालय की नींव जो उनके पिताजी द्वारा रखी गई थी उसे उन्होंने शिखर की ऊँचाइयों तक पहुँचाकर डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में विशेष स्थान दिया।

अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी धर्म-कर्म योगी की भांति वे निरंतर महाविद्यालय की प्रगति एवं विकास हेतु चिंतित व प्रयत्नशील रहे।



सी.एल. जैन महाविद्यालय, फिरोजाबाद का परिचय

सम्बद्ध डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा

विभागीय संकेत संख्या -2112, महाविद्यालय कोड - 031

सी.एल.जैन (पी.जी.) कॉलेज, फिरोजाबाद 1959 में उच्चतर शिक्षा के अध्यापन-अध्ययन तथा प्रचार-प्रसार करने हेतु स्थापित किया गया। इस महाविद्यालय की स्थापना सेठ स्व. श्री छदामी लाल जी जैन की दानवीरता के फलस्वरूप (बी.एस.सी. गणित की कक्षाओं के साथ) की गई। सन् 1966 में यहाँ रसायन विज्ञान व गणित विषय में स्नातकोत्तर स्तरीय कक्षाएँ, वर्ष 1992 में जीव विज्ञान, वर्ष 1999 में कम्प्यूटर विज्ञान व 2011 से बी.कॉम की कक्षाएँ विधिवत चल रही हैं।

महाविद्यालय में नई शिक्षा नीति के अनुसार अध्यापन-अध्ययन कार्य, सेमीनार, कार्यशाला, सतत मूल्यांकन, कक्षा, परीक्षा, प्रश्नोत्तरी, प्रतियोगितायें, प्रयोगात्मक कार्य तथा खेलकूद के लिए सुयोग्य शिक्षक आवश्यक भूमि-भवन उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय तथा अन्य सभी सुविधायें उपलब्ध हैं। NEP के अन्तर्गत स्नातक तथा परास्नातक कक्षाओं के लिए Minor विषय के रूप में अंग्रेजी विषय भी आरम्भ किया गया।

महाविद्यालय में निम्न पाठ्यक्रम संचालित हैं जो डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय से मान्य व सम्बद्ध हैं।

1. पी. एच-डी. (गणित व रसायन विज्ञान)
2. एम.एस-सी. (गणित व रसायन विज्ञान)
3. बी.एस-सी. (गणित ग्रुप व जीव विज्ञान ग्रुप)
4. बी.एस-सी. (वाणिज्य ग्रुप)

बी.एस-सी. गणित वर्ग में, गणित, भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान व कम्प्यूटर विज्ञान के अतिरिक्त छात्र-छात्राओं के लिए शारीरिक शिक्षा विषय भी है। बी.एस-सी. कम्प्यूटर विज्ञान, बी.एस-सी. जीव विज्ञान, बी.कॉम. स्ववित्त पोषित व्यवस्था के अन्तर्गत है।

अनुशासन विभाग

छात्र छात्राओं के अनुशासनात्मक विकास की दृष्टि से महाविद्यालय में एक अनुशासन विभाग है।

अनुशासन प्रमुख व समिति के अध्यापक छात्रों को व्यवहार, आचरण और क्रिया कलापों पर निरन्तर दृष्टि रखते हैं उनकी गोपनीय आख्या भी तैयार करते हैं।

छात्रों के चरित्र प्रमाण पत्र, अनुशासन विभाग की संस्तुति पर ही निर्गत किये जाते हैं।

छात्र छात्राओं में रेगिंग पूर्णतः वर्जित है। महाविद्यालय परिसर के अन्दर अनुचित व्यवहार करने, अनुशासन भंग करने, महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों या छात्र-छात्राओं से दुर्व्यवहार करने सार्वजनिक स्थानों में अव्यवस्था उत्पन्न करने अथवा किसी प्रकार की विधि विरुद्ध गतिविधियों में संलग्न होने के दोषी पाये जाने पर।

पुस्तकालय व वाचनालय

महाविद्यालय के पास एक समृद्ध पुस्तकालय और वाचनालय है, जिसमें सभी विषयों की उत्कृष्ट स्तर की उपयोगी पुस्तकें तथा जनरल्स उपलब्ध हैं। रिफरेन्स बुक भी बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। वाचनालय में दैनिक, साप्ताहिक, मासिक व त्रैमासिक पत्र-पत्रिकाएँ मंगाई जाती हैं। सामान्य ज्ञान से शोध स्तर तक के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। पुस्तकालयाध्यक्ष की देखरेख में सभी व्यवस्थायें सुचारू रूप से चलती हैं।

क्रीड़ा-विभाग

शिक्षा के साथ-साथ छात्र छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के लिए खेल-कूद जैसे वॉलीबाल, फुटबाल, क्रिकेट,



हॉकी, बैडमिन्टन, वास्केटबॉल, कबड्डी, जिमनास्टिक, शतरंज, कैरम आदि गेम उपलब्ध हैं। जिनके नियमित अभ्यास के लिए विशाल खेल का मैदान, आवश्यक उपकरण व अन्य सुविधायें भी उपलब्ध हैं। खेल समिति द्वारा सभी खेल व विभिन्न प्रतियोगिताएँ सुचारू रूप से संचालित की जाती हैं। योग्य खिलाड़ियों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र दिये जाते हैं। वेट-लिफ्टिंग व पावर लिफ्टिंग में हमारे महाविद्यालय की टीम विश्वविद्यालय स्तर पर कई वर्षों से प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करती रही है।

एक्टीविटी क्लब

एक्टीविटी क्लब के अन्तर्गत रोवर्स-रेंजर्स, राष्ट्रीय सेवा योजना व एन. सी.सी. की टीमें गठित हैं। रोवर्स-रेंजर्स की टीम एक दशक से विश्वविद्यालय तथा प्रदेश स्तर पर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करती रही है। रोवर्स-रेंजर्स द्वारा भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को अतिरिक्त अंक प्रदान किये जाते हैं जो पोस्ट-ग्रेजुएट अन्य कक्षाओं में प्रवेश के लिए सरलता प्रदान करते हैं।

एन. एस. एस. के शिविरों में विद्यार्थियों ने कई गाँवों में श्रमदान करके रास्तों को समतल किया, निरक्षरों को शिक्षा प्रदान की तथा विविध क्षेत्रों में ज्ञान का विस्तार किया।

एन. सी. सी. व एन. एस. एस. से प्राप्त अतिरिक्त अंक से पोस्ट ग्रेजुएट व अन्य कक्षाओं में प्रवेश सरल हो जाता है। एन. सी. सी. प्रथम वर्ष से लागू की जाती है। एक्टीविटी क्लब द्वारा समय-समय पर सड़क सुरक्षा, पोस्टर प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, फिल्म प्रसारण आदि किए जाते रहे हैं।

वाहन स्टैण्ड

महाविद्यालय में प्रवेश द्वार के निकट वाहन स्टैण्ड है। वाहन स्टैण्ड पर छात्र-छात्राओं, स्टाफ तथा अभिभावकों आदि के वाहन रखने हेतु अलग-अलग स्थान नियत है।

वाहन स्टैण्ड का अनुशासन तथा व्यवस्था का नियन्त्रण वाहन स्टैण्ड प्रभारी तथा अनुशासन समिति के सदस्यों द्वारा किया जाता है।

NEP के अन्तर्गत विभिन्न समितियों के निरन्तर कार्य प्रगति पर है।

महाविद्यालय में कई प्राध्यापक, इसी महाविद्यालय से ग्रेजुएट व पी-एच.डी. किए हुए हैं।

प्रगति पद पर आरूढ़ छात्र-छात्राओं के पद चिन्ह

विद्यार्थी राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं। महाविद्यालय का परीक्षाफल निरन्तर गुणात्मकता की ओर अग्रसर है। प्रतिवर्ष महाविद्यालय का परीक्षाफल 97 प्रतिशत रहता है। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय परीक्षा 2021-22 में महाविद्यालय स्तर पर सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं का विवरण -

छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा	प्राप्तांक	प्राप्त गोल्ड मेडल (स्मृति में)
1. काजल जैन	श्री राजेश कुमार जैन	एम.एस.सी. गणित	673/900	स्व. सेठ श्री छदामी लाल जैन
2. नेहा राठौर	श्री हरिओम राठौर	एम.एस.सी. रसायन विज्ञान	760/1200	स्व. कु. अंकिता जिन्दल
3. कृति सवासिल	श्री मुकेश कुमार	बी.एस.सी. गणित	1390/1800	स्व. मन्खन सिंह यादव
4. मुस्कान वर्मा	श्री नीरज वर्मा	बी.एस.सी. जीव विज्ञान	1312/1800	स्व. श्री हजारी लाल जैन
5. पल्लवी जादौन	श्री बृजवीर सिंह	बी. कॉम.	1121/1800	स्व. सेठ श्री विमल कुमार जैन



महाविद्यालय में सत्र 2023-24 में वर्षवार कार्यक्रम

1. 17 जून से 21 जून तक योग सप्ताह मनाया गया जिसमें छात्र-छात्राओं के सेमीनार, भाषण, स्लोगन प्रतियोगिताएँ कराई गयी तथा वीडियो द्वारा योगासन प्रतियोगिता कराई गई।
2. 21 जुलाई को माननीय प्रधानमंत्री जी के कार्यक्रम में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विकसित देश बनाने हेतु, विषय-वैज्ञानिक चिन्तन, जागरूकता अनुमय एवं प्रयोग सहित कौशल विकास, नदियों के सरंक्षण आदि छात्र-छात्राओं को प्रोजेक्टर द्वारा दिखाया गया।
3. 22 जुलाई को वृक्षारोपण कार्यक्रम व 15 अगस्त को महाविद्यालय में बने अमर शहीद कैप्टेन देवेश कुमार स्मृति मार्ग का शिलान्यास किया गया।
4. 15 सितम्बर को गणित व शोध परिषद द्वारा एक दिवसीय सेमिनार आयोजित की गई जिसका विषय उच्च शिक्षा में NEP-2020 की प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ इसके अतिरिक्त वार्षिक पत्रिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि- डॉ. के.सी. शर्मा जी रहे।
5. 12 सितम्बर को कर लो सफलता मुठ्ठी में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
6. 02 अक्टूबर को नॉन वायेलेन्स डे पर स्पीच प्रतियोगिता कराई।
7. टी.एस.आई राजेश सिंह द्वारा सड़क सुरक्षा पर संगोष्ठी कराई।
8. 9 दिसम्बर को मिशन शक्ति शपथ ग्रहण कार्यक्रम हुआ।
9. 20 दिसम्बर को महाविद्यालय के मुख्य कार्यालय तथा प्रबन्ध कक्ष के नवीनीकरण का उद्घाटन कराया गया।
10. 26 जनवरी को मेधावी छात्र-छात्राओं का गोल्ड मेडल, सर्टिफिकेट व प्राइज प्रदान किए गए।
एम.एससी. गणित काजल -सेठ छद्दामी लाल जैन की स्मृति में
एम.एससी. रसायन विज्ञान-नेहा राठौर-स्व. अंकिता जिन्दल
बी.कॉम. की छात्रा पल्लवी जादौन-स्व. श्री विमल कुमार जैन
बी.एससी. बायो.-मुस्कान वर्मा-स्व. श्री हजारी लाल जैन
बी.एससी. गणित-कृति सवासिल-स्व. श्री मन्खन सिंह
11. 15 फरवरी को राम मन्दिर के ऊपर राम अंतरिक्ष वेध उत्सव पर आयोजित पेन्टिंग प्रतियोगिता
12. 20 फरवरी को कम्प्यूटर विभाग में शिक्षकों को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा उच्चतर शिक्षा अभियान पर कार्यक्रम दिखाया गया।
14. 23-24 फरवरी को स्वामी विवेकानन्द युवा सशक्तिकरण योजना के तहत बी.एससी. व बी.कॉम. के 343 छात्र-छात्राओं को स्मार्टफोन प्रदान किये गये।
15. 5 मार्च को डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय के 89वें दीक्षान्त समारोह में महाविद्यालय की छात्र काजल जैन को एम.एससी. गणित में गोल्ड मेडल प्राप्त हुआ।
16. 5 मार्च-19 मार्च तक सात दिवसीय NSS शिविर का आयोजन हुआ।
17. 12 मार्च-20 मार्च तक खेल प्रतियोगिता करायी गयी।
18. 20 मार्च को निर्धन छात्र-छात्राओं को चैक वितरित किये गये, खेल प्रतियोगिता के विजयी छात्र-छात्राओं को मेडल और सर्टिफिकेट प्रदान किये गये, और कौशल विकास आदि के लिये कम्प्यूटर लैब के नवीनीकरण का प्रबन्ध समिति द्वारा उद्घाटन किया गया।
19. 14 मार्च को उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम हुआ।
20. 15 अप्रैल को वर्षवार कार्यक्रम के विजेता छात्र-छात्राओं को सर्टिफिकेट देकर प्राचार्य जी द्वारा सम्मानित किया गया।
21. 14 मई को प्राचार्य जी की अध्यक्षता तथा मुख्य अतिथि (प्रबन्ध समिति) की उपस्थिति में डिग्री वितरण समारोह सम्पन्न हुआ।





अध्यक्ष जी व पूर्व सेक्रेटरी साहब, सेक्रेटरी साहब, प्राचार्य जी



शिक्षक गण



शिक्षणेत्तर कर्मचारी



अनुशासन, एण्टी रैगिंग एवं साईकिल स्टैण्ड समिति

डिग्री वितरण कार्यक्रम



नैक समिति

पुस्तकालय एवं वाचनालय



डीजीशक्ति समिति



IQAC समिति



लघु निर्माण समिति



एक्टिविटी क्लब



खेलकूद समिति



संस्थागत विकास प्रकोष्ठ



महिला उत्पीड़न समिति



रेंजर-रोवर



डॉ. श्रीमती रश्मि जिन्दल
(रेंजर्स प्रभारी)

रेंजर्स/रोवर्स नवयुवकों के लिए एक स्वयंसेवी, गैर-राजनीतिक शैक्षिक आन्दोलन है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए बिना किसी जाति, वंश तथा धर्म के भेद-भाव के खुला है। यह 1907 में संस्थापक लार्ड बैडेन पावेल द्वारा संचालित किये गये लक्ष्य सिद्धांत तथा पद्धति के अनुरूप है। महाविद्यालय के विद्यार्थियों को सामाजिक उत्तरदायित्व की समझ, विपरीत परिस्थितियों में कार्य करना, जनजागरूकता, राष्ट्र के प्रति संवेदनशील, धर्म, जाति, वर्ग, लिंग के परे होकर सेवा प्रदान करने की भावना जागृत करने के लिए रेंजर/रोवर इकाई की स्थापना की गई है। प्रति वर्ष विशेष कैंम्प लगाकर विद्यार्थियों को रेंजर/रोवर का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षणोपरान्त रेंजर/रोवर का सर्टिफिकेट दिया जाता है।

रेंजर्स/रोवर्स का दूसरे के प्रति कर्तव्य

स्थानीय राष्ट्रीय, तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति, समझ और सहयोग की भावना से समन्वय रखते हुए अपने देश के प्रति वफादार होना।

अपने साथियों की गरिमा तथा विश्व के प्रति अखण्डता के लिए अभिज्ञान तथा सम्मान के साथ समाज के विकास के भाग लेना।

एक/रेंजर की प्रगतिशील विकास योजना

15 वर्ष के एक लड़के/लड़की को एक रेंजर/रोवर एस्पिरेंट के रूप में प्रवेश दिया जा सकता है।

- * प्रवेश: एक रेंजर/रोवर एस्पिरेंट को प्रवेश रेंजर/रोवर की दीक्षा प्राप्त करने से पहले 3 माह तक कार्य करना होगा।
- * निपुण बैज: एक प्रवेश रेंजर/रोवर को निपुण बैज एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु कम से कम 6 माह कार्य करना होगा।
- * राज्य पुरस्कार बैज: एक निपुण रेंजर/रोवर को राज्य स्तरीय प्रमाण पत्र एवं बैज जिसे राज्य पुरस्कार रेंजर/रोवर कहते हैं, को प्राप्त करने हेतु कम से कम 9 माह कार्य करना होगा।

रेंजर्स एवं रोवर्स की महत्ता

रेंजर/रोवर प्रभाग में सम्पन्न होने वाले आदर्श कार्यक्रम निर्माण में निम्नलिखित प्रेरणा तत्व स्वीकार किए गए हैं, रेंजर/रोवर कार्यक्रम को पूरा कर लेने तक कोई भी युवा युवती-

1. स्काउटिंग को अपनी जीवन प्रणाली बना लेगा/लेगी।
2. सक्रिय और सहभागी नागरिक बन सकेगा/सकेगी।
3. दूसरों के लिए उपयोगी बनने और आत्म-निर्भर बनने के कौशलों (व्यावसायिक व अन्य) को समृद्ध बना सकेगा/सकेगी।
4. ऐसा व्यवहारिक आदमी बनकर उभर सकेगा जिसमें अपने प्रति व अन्य लोगों और उनके अनुभवों के प्रति सम्मान का भाव हो।

5. यह अनुभव कर सकेगा/सकेगी कि अपने समुदाय के विकास में उसका दायित्व है और सामुदायिक विकास में उसका दायित्व है और सामुदायिक विकास की परियोजनाओं को व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से हाथ में ले सकेगा/सकेगी।



6. ईश्वर और मनुष्य की सेवा में रत रहकर विशुद्ध धार्मिक जीवन बिता सकेगा/सकेगी।
7. पारस्परिक समझ और पूर्ण सामंजस्यपूर्ण मधुर जीवन बिता सकेगा/सकेगी।
8. सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षार्थ पूर्ण प्रयत्न कर सकेगा/सकेगी।
9. स्वयं को अपने देश के प्रति कर्तव्य पालन करने के लिए तैयार कर सकेगा/सकेगी और विश्वबन्धुत्व के प्रति प्रेम विकसित कर सकेगा/सकेगी अर्थात् मानव जाति में सद्भावना व शान्ति का प्रसार कर सकेगा/सकेगी।
10. रोवरिंग के कोशलों का पूर्ण प्रयोग करते हुए दूसरों के लिए यथेष्ट खतरा मोल लेने की निश्चित अभिवृत्ति अपना सकेगा/सकेगी।
11. मानवी मुल्यों के प्रति श्रद्धा रखते हुए अपनी राष्ट्रीय विरासत और संस्कृति की रक्षा के लिए कार्य कर सकेगा/सकेगी।
12. राष्ट्रीय एकता, जनसंख्या शिक्षण, पर्यावरण संरक्षण, साक्षरता, कुष्ठ नियन्त्रण और स्वच्छता प्रबन्ध जैसी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं से सम्बन्धित विकासात्मक प्रवृत्तियों में भाग ले सकेगा/सकेगी और उन्हें आगे बढ़ाने में हाथ बटा सकेगा/सकेगी।
13. ऐसा कुटनीतिज्ञ नेता बन सकेगा/सकेगी जो अपने दल को साथ लेकर ऊपर उठे।
14. सामान्य विश्व समस्याओं की समुचित समझ रख सकेगा/सकेगी।

उद्देश्य:-

रेंजर/रोवर आन्दोलन का उद्देश्य नवयुवकों के विकास में इस तरह योगदान करना है जिससे उनकी पूर्ण शारीरिक, भौतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा संवेगिक अन्तः शक्ति को व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नागरिकों के रूप में यथा स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय समुदायों के रूप में प्राप्त किया जा सके।

महाविद्यालय में 24 छात्राओं की रेंजर दल है जिसका नाम सरबती बाई रेंजर्स टीम है और 24 छात्रों का रोवर्स दल जिसका नाम छदामीलाल रोवर्स क्रू है। इस वर्ष रेंजर/रोवर का प्रवेश शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 57 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

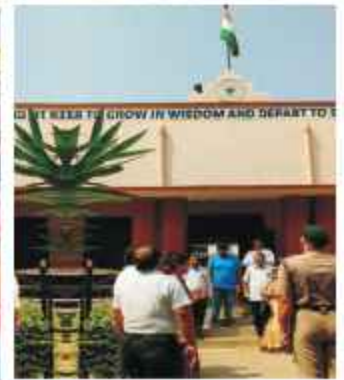
डॉ. के. के. सिंह महाविद्यालय में रोवर्स प्रभारी के रूप में कार्यरत हैं।



रेंजर्स-रोवर्स



C.L. Jain College, Firozabad Rangers & Rovers



N.S.S





नॉन वायर्लेस डे पर निबन्ध प्रतियोगिता



ग्रीष्म परिषद तथा पत्रिका विमोचन



खेलकूद विजेता को अध्यक्ष जी द्वारा मेडल

सीएल जैन महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा संगोष्ठी संपन्न



संजय जी महाराज द्वारा दूरी ट्रेनिंग विक्टर के टी. एन. अट्ट, इलाहाबाद।

विद्यार्थियों में सड़क-सुरक्षाओं को अवगत करवाकर। छात्र-छात्राओं को सड़क सुरक्षा की अवगत की विद्यार्थी सट्ट। सुरक्षात्मक गतिविधियों के आयोजन में विद्यार्थी जैन की उपस्थिति में सहभागिता। कार्यक्रम का संयोजन विद्यार्थी सट्ट, पंचायत समिति ने किया। इस अवसर पर विद्यार्थी सुरक्षा विद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम परियोजना चलाया गया।



पौधारोपण कार्यक्रम

N.C.C. & Parabolic Camp





National Service Scheme Report

Mrs. Pooja Tyagi
Programme officer NSS

National Service Scheme is a central sector scheme of government of India, Ministry of youth Affairs and sports. It provides opportunities to the students youth of schools, Technical Institutions, Graduate & Post Graduate at colleges of University level of India to take part in various government led community service activities and programmes. National Service Scheme was launched during 1969, the birth centenary year of Mahatma Gandhi in 37 universities involving 40000 student. NSS is an extension dimension to the higher education system to orient the student youth to community service while they are studying in educational institutions. The motto of National Service Scheme is "NOT ME BUT YOU".

The aims and objective of NSS involve to understand the community in which they work, to identify the needs and problem solving process to develop among themselves a sense of social and civic responsibility, to gain skills in mobilising community participation to acquire leadership qualities and to practice national integration and social harmony etc. Students in various universities, colleges and institutions of higher learning volunteer to take part in various community service programmes.

There is one unit of N.S.S in C.L. Jain college, Firozabad. NSS uses the opportunities to not only develop and groom the students of the college, but also pay back to the society. Round the year, there are a number of activities that has been done by NSS unit of the college. These activities involve.

1. Plantation
2. Clearlines Drive
3. Meri Mati Mera Abhiyan
4. Nasha Mukti Shapath
5. Mission Shakti Related Programme
6. Rashtriya Ekta Diwas (Shapath & Quiz Competetion)
7. Sadak Suraksha Programme (Shapath, Training Rally)
8. Voter awarness programme (Rally & Poster Competetion)
9. Water conservation Rally and Poster Competetion
10. Women Empoverment Programme (Rangoli Competetion, Nukkad Natak, Speech)

Besides these activities four one day camps has also been organized, in which hundred volunteer have participated. A seven days special camp has been organized in upper primary school, Rehna Firozabad in which 50 Volunteer have participated and contributed to sommunity services.



National Cadet Corps: Shaping Leaders and Patriots of Tomorrow

The National Cadet Corps (NCC) is a premier youth organization in India that instills discipline, leadership, and a sense of patriotism among the youth. Established in 1948, NCC has grown into a robust organization that recruits cadets from high schools, colleges, and universities, providing them with a platform to engage in military training, adventure activities, and social service.

Mission and Objectives

The NCC aims to develop qualities of character, courage, comradeship, discipline, leadership, secular outlook, and the spirit of adventure among young citizens. It also motivates cadets to take up careers in the Armed Forces, thus acting as a feeder institution.

Organizational Structure

NCC is a tri-service organization comprising the Army, Navy, and Air Wing, each offering a regime, combining theoretical knowledge with practical experience.

Enrollment and Training

Enrollment in NCC is voluntary. Cadets are divided into two categories:

- ***Junior Division*** For School students aged 13-18 years.
- ***Senior Division*** For College and University students aged 19-26 years.

The training period typically lasts two to three years, during which cadets undergo rigorous training in drills, physical fitness, weapon handling, and participate in various camps and courses.

Key Activities and Camps

1. ***Drills and Parades*** Regular practice sessions and participation in parades enhance discipline and teamwork.
2. ***Weapon Training*** Cadets are trained in handling firearms, fostering a sense of responsibility and safety.
3. ***Adventure Training*** Activities such as trekking, rock climbing, sailing, and para-jumping develop physical endurance and mental resilience.
4. ***Social Service*** NCC cadets actively participate in community development and social welfare activities, such as blood donation camps, disaster relief efforts, and Swachh Bharat Abhiyan.



National and International Exposure

NCC cadets get the opportunity to attend various national camps like the Republic Day camp, Thal Sainik Camp, and Vayu Sainik Camp. These camps foster camaraderie among cadets from different states and backgrounds, promoting national integration.

International exposure is also a highlight, with cadets participating in Youth Exchange Programmes (YEP) with friendly countries. This not only broadens their horizons but also strengthens bilateral relations.

Benefits of Joining NCC

1. ***Personality Development*** The rigorous training and varied activities contribute to holistic personality development, instilling confidence, leadership, and self-discipline.
2. ***Career Opportunities*** NCC cadets enjoy certain advantages in various sectors, especially in the armed forces, where they are given preference through special entry schemes.
3. ***Scholarships and Financial Aid*** Meritorious cadets can avail themselves of scholarships and financial support for higher education.
4. ***Adventure and Travel*** Participation in adventurous activities and national camps offers cadets the thrill of exploration and travel.
5. ***Community Service*** Involvement in social service activities helps develop a sense of responsibility and civic duty.

Conclusion

The NCC stands as a beacon of youth empowerment, shaping the leaders and patriots of tomorrow. Through its comprehensive training programs and diverse activities, it prepares young individuals to take on challenges with confidence and serve the nation with pride. Joining NCC is not just about wearing a uniform; it's about embracing a way of life that values discipline, duty, and dedication. In our college NCC cadets have a very punctual schedule on Friday Saturday cadets do proper drill involve in many activities like debate, group discussion, cultural activities and after that take refreshment and organise many events like NCC day we celebrate with proper discipline in the observation or anano Mukesh Chaudhary sir and pi staff and republic day including all cadets celebration by performing drill this is all about activities done in CLJ College.



सी.एल.जैन महाविद्यालय में किया गया “डिग्री वितरण समारोह”

20 छात्र छात्राओं को सम्मानित कर की उज्ज्वल भविष्य की कामना

जनपद के प्रतिष्ठित सी.एल. जैन महाविद्यालय में प्राचार्य प्रोफेसर वैभव जैन की अध्यक्षता और प्रबंध समिति सचिव प्रवीन कुमार भटनागर, पूर्व सचिव डॉक्टर अनिल यादव एवं मीडिया कर्मियों की गरिमामय उपस्थिति में “डिग्री वितरण समारोह का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ मां सरस्वती की फोटो पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया गया। मंच का संचालन डॉक्टर अरुण यादव ने किया।

कार्यक्रम में अन्नू बलिया, अनामिका सिंह, संगीता गौतम, स्वाति उपाध्याय, रितिका शर्मा, आर्य दुबे, तान्या गुप्ता, अरबाज, फराज खान, हरिओम, कैफ, कुशाग्र अग्रवाल, विनय प्रताप, विपिन कुमार, वैभव यादव, हर्ष शर्मा, सुशांत सिंह, सौरभ, अमनदीप सागर सहित 19 छात्र-छात्राओं को डिग्री प्रदान की गई। जिसे पाकर सभी के चेहरे खुशी से खिल उठे।

महाविद्यालय से संबंधित अपने अनुभव साझा करते हुए तान्या गुप्ता ने कहा कि, सी.एल. जैन जनपद का सर्वश्रेष्ठ महाविद्यालय है। जहां, सभी छात्र-छात्राएं उच्च शिक्षा ग्रहण करते हैं।

पूर्व सचिव डॉक्टर अनिल यादव ने अपना अनुभव सुनाते हुए कहा कि, डिग्री प्राप्त करना प्रत्येक छात्र का सपना होता है और आज बच्चों को डिग्री प्रदान करते हुए हमें बड़ा ही हर्ष हो रहा है।

प्रबंध समिति सचिव प्रवीन कुमार भटनागर ने सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए एक कहानी सुनाते हुए समझाया कि, किसी भी घटना से हम किसी के बारे में अपनी राय कायम नहीं कर सकते।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ. हेमलता यादव, डॉ. रश्मि जिंदल, डॉ. जी.सी. यादव, दीपक कुमार, शिवानी गोयल, डॉक्टर एसपी. सिंह, डॉ. के.के. सिंह, डॉ. कुबेर सिंह, डॉ. दीपिका चौधरी, डॉ. संजय सिंह, डॉ. प्रदीप जैन व अन्य उपस्थित रहे।



स्मार्ट फोन/टैबलेट वितरण समारोह



कौशल विकास के लिए कम्प्यूटर लेब तैयार की



सम अंतरिक्ष वैद्यशाला पर पेंटिंग प्रतियोगिता



उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम



विभिन्न प्रतियोगिता के विजेता छत्र-छात्राएँ



प्रबन्ध समिति कक्ष तथा कार्यालय नवीनीकरण



मिशन शक्ति शपथ ग्रहण



NISM Financial Education Programme



निर्धन छात्र-छात्राओं को चेक वितरण



कर लो सफलता मुट्ठी में



विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह में काजल अर्जुन को मेडल



खेलकूद-विजेता को मेडल वितरण



उत्कृष्ट छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह



पिंक
पेटिका





प्रोफेसर (डॉ.) वैभव जैन प्राचार्य

सी.एल.जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फिरोजाबाद

आपदा प्रबंधन

आपदा एक ऐसी समय के साथ होने वाली घटना है जो वस्तुओं लोगों, पर्यावरण तथा समाज को इतनी बुरी तरह प्रभावित करती है कि उनमें अपने आप सुधार होना सम्भव नहीं होता है:-

आपदा को हम मुख्यतः दो प्रकार में विभाजित कर सकते हैं:-

- (1). **प्राकृतिक आपदा**:- यह प्राकृतिक वातावरण में परिवर्तन के कारण होती है। उदाहरण:- भूस्खलन, बाढ़, भूकंप, ठण्डी लहर, गर्म लहर, सूखा, चक्रवात, सुनामी, अकाल, ज्वालामुखी विस्फोट, महामारी आदि।
- (2). **मानव द्वारा उत्पन्न आपदा**:- यह मानवीय स्वार्थों से उत्पन्न होती है। उदाहरण:- युद्ध, आग फैलना, दुर्घटना (परिवर्तन, औद्योगिक आदि), प्रदूषण, जैविक युद्ध आदि।

बड़ी आपदा (Major Disaster):- एक ऐसी आपदा जिसमें (1) कम से कम 100 व्यक्तियों की मृत्यु (2) कम से कम 100 व्यक्ति घायल तथा (3) कम से कम 10 लाख डॉलर का आर्थिक नुकसान होता है, बड़ी आपदा कहलाती है।

आपदा में अत्यधिक हिंसा, लोगों का पलायन, सामाजिक नुकसान होता है।

आपदा प्रबंधन

आपदा प्रबंधन का तात्पर्य एक ऐसी योजना बनाने से है जिसके द्वारा आपदा के घटित होने की सम्भावना को कम करने की कोशिश की जाती है तथा आपदा घटित होने पर त्वरित कार्यवाही करके आपदा द्वारा होने वाले नुकसान को सीमित करने का प्रयास किया जाता है।

आपदा प्रबंधन के निम्न चरण हैं:-

- (1). आपदा से बचाव की तैयारी (Preparedness):- आपदा के प्रकार तथा उसके उत्पन्न होने के कारण आदि पर विचार करके आपदा के आने की सम्भावना को कम करना तथा आपदा की स्थिति में सहायता कार्य करने की योजना बनाना।
- (2). त्वरित कार्यवाही (Response):- आपदा आने पर यह कार्ययोजना बनाना कि कम से कम समय में आपदा स्थल पर आवश्यक सामान लेकर कैसे पहुँचा जाये।
- (3). सुधार (Recovery):- आपदा से होने वाले नुकसान को सीमित करना।
- (4). आपदा का प्रभाव कम करना (Mitigation):- आपदा के कारण स्वास्थ्य, आर्थिक नुकसान आदि के लिए मेडीकल, आर्थिक सहायता करना।
- (5). विकास (Development):- आपदा से होने वाले पुल, सड़क आदि का पुर्ननिर्माण करना जिससे सहायता करना आसान हो सके तथा पुनः आपदा न आवे।

भारत में आपदा के कारण व उदाहरण

कारण:- भारत की 57% भूमि भूकंप सम्भावित क्षेत्र में है तथा इसमें से 12% भूमि अधिक जोखिम क्षेत्र है।

- * भारत की 68% भूमि सूखा सम्भावित है।
- * भारत की 12% भूमि बाढ़ सम्भावित है।



★ भारत की 8% भूमि चक्रवात सम्भावित है (तटीय क्षेत्र)

★ औद्योगिक प्रगति के कारण भारत के कई शहर मानवीय आपदा जैसे इण्डस्ट्री, एक्सीडेन्ट आदि आपदा सम्भावित है।

उदाहरण:- भारत में आपदाओं के कुछ उदाहरण निम्न हैं-

1. 1769-1770 में वृहद बंगाल में अकाल पड़ा था जिसमें उस वक्त की लगभग तिहाई आबादी खत्म हो गई थी।

2. इसी प्रकार 1783 में चालीसा में उत्तर पश्चिम क्षेत्र में सन् 1790-1792, उत्तर पश्चिम भारत में सन् 1861, बंगाल और उड़ीसा में सन् 1866, राजपूताना में सन् 1869, 1899-1901, बंगाल में 1943 तथा सन् 1965, 1972, 1979, 1987 व 2002 में सूखा आपदा आई थी।

3. सन् 1984 में भोपाल में गैस काण्ड हुआ था। इन सब आपदाओं में हमेशा राहत कार्य पर जोर दिया जाता रहा परन्तु समय के साथ यह सोचा गया कि क्यों न आपदाओं के आने से पूर्व ही उनसे बचाव की तैयारी की जाये जिससे नुकसान कम से कम हो सके।

अतः इन सबको व विश्व की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सन् 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 लागू किया गया।

आपदा प्रबंधन कानून 2005

इस कानून में 11 चैप्टर तथा 79 सेक्शन हैं। इसका उद्देश्य आपदा प्रभावित लोगों की सहायता करना है। इसमें निम्न प्रावधान हैं-

(1). इसके द्वारा प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक कमेटी NDMA (National Disaster Management Authority) का गठन किया गया है। इस कमेटी का कार्य राज्य सरकारों की योजनाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए आपदा प्रबंधन के लिए योजना, नियम, निर्देश बनाना और उनका आपदा के समय त्वरित प्रभावी रूप से पालन कराना है।

(2). National Executive Committee (NEC):- Under Section 8 NDMA के सहयोग के लिए सभी सरकारी विभागों तथा रक्षा मंत्रालय के सचिव स्तर के अधिकारियों की ऐसी कमेटी बनायी गई जो पूरे देश के लिए आपदा प्रबंधन की योजना बनाती है और उसकी वार्षिक रूप से समीक्षा करती है। इसकी अध्यक्षता गृह सचिव करते हैं।

(3). State Disaster Management Authority (SDMA):- सेक्शन 14 के द्वारा राज्य के मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में उनके द्वारा नामित अधिकतम 8 सदस्यों की ऐसी कमेटी जिसका कार्य राज्य स्तरीय योजना बनाना तथा राज्य स्तरीय व राष्ट्र स्तरीय प्रबंधन योजना लागू करना है।

(4). District Disaster Management Authority (DDMA) :- अनुच्छेद 65 के अनुसार जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिले के जनप्रतिनिधियों की कमेटी है जो आपदा प्रबंधन सुनिश्चित करती है।

(5). National Disaster Response Force (NDRF):- अनुच्छेद 44-45 के अनुसार आपदा के लिए विशेषज्ञों की एक ऐसी टीम बनायी गई जो उस आपदा विशेष में प्रभावी और त्वरित कार्यवाही कर राहत पहुँचा सके।

आपदायें और उनका प्रबंधन

विभिन्न आपदाओं के लिए सरकार के विभिन्न मंत्रालय योजनायें बनाते हैं और उसके लिए बजट की व्यवस्था करते हैं। कुछ आपदायें व इनके संबंधित मंत्रालय तथा आपदा प्रबंधन की योजनायें निम्न हैं-

(1). सूखा:- इसके लिए 'खेती तथा पशुपालन मंत्रालय' तथा 'जल संपदा मंत्रालय (CWC) योजना बनाते हैं।

इसके लिए संभावित क्षेत्रों में नहर का जाल, वर्षा जल संचयन, भूगर्भ जल संचयन, जल संरक्षण आदि योजनायें



चलाते हैं और आपदा के समय कृत्रिम वर्षा, रेल द्वारा जल पहुँचाना भी इसमें शामिल है।

(2). **भूकंप:-** भारत मौसम विभाग' इसके लिए योजना बनाता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है कि विभिन्न तकनीक का प्रयोग करके पूर्व में ही सूचना प्राप्त करना जिससे स्थान विशेष पर चेतावनी देकर नुकसान कम किया जा सके। इसके अतिरिक्त भूकंप रोधी मकान, पुल आदि के निर्माण को बढ़ावा देना तथा भूकंप आने की स्थिति में नागरिकों को बचाव का प्रशिक्षण देना भी शामिल है।

(3). **बाढ़:-** जल संपदा मंत्रालय (CWC) इसके लिए योजना बनाता है। इसके लिए बाढ़ सम्भावित नदियों से नहरों का जाल बनाया जाता है, उन पर बाँध बनाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त नागरिकों को बारिश के पानी को भूगर्भ जल के रूप में तथा तालाब आदि बनाकर संरक्षित करने के लिए सुझाव दिये गये हैं।

(4). **गर्म लहर (Heat Wave):-** 'स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय' द्वारा गर्मियों के दिनों में नागरिकों को हीट वेब से बचाव के निर्देश विभिन्न माध्यमों से जारी किये जाते हैं। विभिन्न सरकारी विभागों में निर्देशों के प्रचार-प्रसार के लिए आदेश जारी करते हैं और गर्मियों में अस्पतालों में ऐसे मरीजों के लिए अतिरिक्त व्यवस्था की जाती है।

(5). **महामारी:-** 'स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय' एवं 'खेती एवं पशुपालन मंत्रालय' तथा पर्यावरण मंत्रालय' योजनायें बनाते हैं। इन योजनाओं में वैश्विक तथा देश या स्थानीय स्तर पर किसी भी प्रकार की महामारी के वृद्धि के आंकड़ों पर नजर रखना सबसे महत्वपूर्ण है।

जैसे ही किसी बीमारी का पता चलता है तो उस स्थान को सेनेटाइज करने की योजना बनायी जाती है जिससे वह माहमारी न फैल पाये। विभिन्न सामाजिक, सरकारी संस्थाओं द्वारा नागरिकों को जानकारी तथा बचाव का प्रशिक्षण दिया जाता है।

(6). **परिवहन एक्सीडेंट:-** परिवहन, रेलवे, उड्डयन मंत्रालय के द्वारा विभिन्न परिवहन के साधनों का सुरक्षा की दृष्टि से मानक बनाये जाते हैं। ड्राइविंग लाइसेंस की प्रक्रिया सुधारी जाती है तथा एक्सीडेंट से बचाव व एक्सीडेंट होने पर अपने नुकसान को कम करने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

(7). **इण्डस्ट्री एक्सीडेंट:-** श्रम मंत्रालय, खनन, पर्यावरण व जंगल मंत्रालय यह सुनिश्चित करते हैं कि इण्डस्ट्री आपदा से बचाव के सभी आवश्यक उपाय मानकानुसार पूरा करे। सभी उपायों का वार्षिक रूप से निरीक्षण भी किया जाता है तथा कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

(8). **आग:-** गृह मंत्रालय, पर्यावरण व जंगल मंत्रालय यह देखता है कि नागरिक क्षेत्र तथा जंगलों में आग न फैले, ऐसे स्थानों पर आग रोकने के सभी उपायों की व्यवस्था की जाती है। आग लगने पर बचाव तथा आग को बुझानों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आपदा प्रबंधन का मुख्य चरण है कि आपदा के आने के कारणों को खत्म करने के लिए तथा पूर्व सूचना के लिए तकनीकी नेटवर्क एवं निगरानी के लिए उपग्रह, संचार माध्यम, बिजली व्यवस्था, परिवहन व्यवस्था, पानी आदि की व्यवस्था, पहले से ही रखी जाये।

इन सब व्यवस्था के लिए एक सहायता-कोष स्थापित किया जाये जिसका पारदर्शी संचालन हो। विभिन्न स्थानों को आपदा इतिहास के अनुसार स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण देना तथा मॉक ड्रिल कराना आवश्यक है। स्थानीय लोगों को आपदा विशेषज्ञों की सूची देना और विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं में आपसी तालमेल स्थापित करना सबसे आवश्यक है।

अतः हमें हमेशा आपदा के लिए तैयार रहने की संस्कृति विकसित करनी होगी और सभी को आपदा के समय सरकार द्वारा जारी आचार-संहिता का पालन करना चाहिए।



Roll of digital Marketing in Modern Business Era



Dr. Arun Kumar Yadav

Incharge - Department of Commerce

In today's modern business era, digital marketing has become a crucial aspect of any business's success, and this is especially true for news websites. As more and more people turn to the internet for their news, digital marketing provides news websites with the tools to reach and engage with their target audience effectively. In this article, we will explore the importance of digital marketing for news websites and how it can help them stay relevant and competitive in the digital age.

Digital marketing can help news websites increase their visibility and reach online. By implementing search engine optimization (SEO) techniques, news websites can improve their website's ranking on search engines, such as Google. This means that when people search for news online, the news website is more likely to appear on the first page of search results, increasing their visibility and reach.

Digital marketing allows news websites to engage with their audience in real-time, providing them with the opportunity to get feedback, comments, and suggestions from their readers. Social media platforms such as Facebook, Twitter, and Instagram have become an essential tool for news websites to connect with their audience and build a loyal following.

Digital marketing is a cost-effective way for news websites to reach their target audience. Traditional marketing methods such as print, radio, and television advertising can be expensive, and often reach a broad audience that may not be interested in the news website's content. Digital marketing, on the other hand, can be targeted to specific audiences, and the cost is relatively low compared to traditional methods.

Digital marketing allows news websites to collect and analyze data on their audience's behavior, preferences, and interests. This data can help them tailor their content to their audience's needs and interests, improving engagement and loyalty.

Digital marketing allows news websites to reach their audience through multiple channels, such as email marketing, social media marketing, and content marketing. This multi-channel approach helps news websites stay relevant and top-of-mind with their audience, increasing the likelihood of engagement and loyalty.

In conclusion, digital marketing is a crucial aspect of modern business, and news websites must incorporate it into their marketing strategy to stay competitive and relevant in the digital age. Digital marketing provides news websites with increased visibility and reach, better engagement with their audience, cost-effective marketing, data-driven marketing, and multi-channel marketing.



कम्प्यूटरीकृत लेखांकन वातावरण: अर्थ, विशेषताएं, महत्व



डॉ. अरुण कुमार यादव

इंचार्ज (वाणिज्य विभाग)

कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणाली एक सॉफ्टवेयर है जो व्यवसायों को बड़े वित्तीय लेनदेन, डेटा, रिपोर्ट और बयानों को उच्च दक्षता गति और बेहतर सटीकता के साथ प्रबंधित करने में मदद करती है। बेहतर गुणवत्ता वाला कार्य कम परिचालन लागत, बेहतर दक्षता, अधिक सटीकता, न्यूनतम त्रुटियाँ कम्प्यूटरीकृत लेखांकन के कुछ फायदे हैं। आइए कम्प्यूटरीकृत लेखांकन वातावरण के बारे में और जानें।

* कम्प्यूटरीकृत लेखांकन की आवश्यकता

इसकी आवश्यकता व्यवसायिक लेनदेन को संभालने की गति, सटीकता और कम लागत के लाभों से उत्पन्न होती है। साथ ही, इसमें बड़ी संख्या में लेनदेन को गति और सटीकता के साथ रिकॉर्ड करने की क्षमता है। यह अपनी गति और सटीकता के कारण त्वरित और गुणवत्तापूर्ण रिपोर्टिंग की अनुमति देता है।

मैन्युअल लेखांकन प्रणाली में लेखांकन रिकॉर्ड और वाउचर रखने के लिए बड़े भण्डारण की आवश्यकता होती है। वाउचर और दस्तावेजों के साथ-साथ पुस्तकों और स्टेशनरी और खातों की पुस्तकों की आवश्यकता लेनदेन की मात्रा पर निर्भर करती है।

* कम्प्यूटरीकृत लेखांकन की आवश्यकता

यह लेखांकन प्रणाली और संस्थाओं के बीच इसकी जागरूकता वर्तमान परिवेश में एक आवश्यकता बन गई है। किसी भी क्षेत्र और बड़े आकार के व्यवसाय मैन्युअल रूप से खाते बनाए रखने की प्रथा से हट रहे हैं। मैन्युअल प्रक्रिया अधिक समय लेने वाली और मानवीय त्रुटि से पूर्ण है।

पारंपरिक प्रणाली में डेटा का भण्डारण और पुनः प्राप्ति और रिपोर्ट तैयार करना वास्तविक समय में सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है। कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रणालियों को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने व्यवसाय को वित्तीय प्रदर्शन की सटीक जानकारी पेश करने के लिए सशक्त बनाया है।

1. सरल और एकीकृत: यह सभी व्यवसायिक गतिविधियों को स्वचालित और एकीकृत करके सभी व्यवसायों की मदद करता है। ऐसी गतिविधियाँ बिक्री, वित्त, खरीद, इन्वेंट्री और विनिर्माण आदि हो सकती हैं। यह आसानी से उपयोग करने योग्य रूप में सटीक और अद्यतन व्यवसायिक जानकारी की व्यवस्था की सुविधा भी देती है।

2. सटीकता और गति: कम्प्यूटरीकृत लेखांकन में उपयोगकर्ताओं के लिए अनुकूलित टेम्पलेट हैं जो तेज और सटीक डेटा प्रविष्टि की अनुमति देते हैं। इस प्रकार, लेनदेन को रिकॉर्ड करने के बाद यह स्वचालित रूप से



जानकारी और रिपोर्ट उत्पन्न करता है।

3. **स्केलेबिलिटी:** इसमें व्यवसाय की बदलती मात्रा के साथ लेनदेन को रिकॉर्ड करने की सुविधा है।

4. **त्वरित रिपोर्टिंग:** उच्च गति और सटीकता के कारण यह वास्तविक समय में गुणवत्तापूर्ण रिपोर्ट तैयार कर सकता है।

5. **सुरक्षा:** पारंपरिक लेखा प्रणाली की तुलना में सुरक्षित डेटा और जानकारी को गोपनीय रखा जा सकता है।

6. **त्वरित निर्णय लेना:** यह प्रणाली वास्तविक समय, व्यापक एमआईएस रिपोर्ट तैयार करती है और संपूर्ण और महत्वपूर्ण जानकारी की तुरंत पहुँच सुनिश्चित करती है।

7. **विश्वसनीयता:** यह निरंतरता और सटीकता के साथ रिपोर्ट तैयार करता है। त्रुटियों को न्यूनतम करने से सिस्टम अधिक विश्वसनीय हो जाता है।

★ कम्प्यूटरीकृत लेखांकन के लाभ

1. **बेहतर गुणवत्ता वाला कार्य:** कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली के उपयोग से तैयार किए गए खाते आमतौर पर एक समान, साफ-सुथरे, सटीक और मैनुअल कार्य की तुलना में अधिक सुपाठ्य होते हैं।

2. **कम परिचालन लागत:** कम्प्यूटर एक विश्वसनीय और समय बचाने वाला उपकरण है। कम्प्यूटरीकृत प्रणाली की मदद से संभाले गए कार्य की मात्रा के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था और कम परिचालन लागत होती है। इस प्रणाली की कुल परिचालन लागत पारंपरिक प्रणाली की तुलना में कम है।

3. **दक्षता में सुधार:** यह प्रणाली पारंपरिक प्रणाली की तुलना में अधिक कुशल है। कम्प्यूटर रिकॉर्ड और खाते तैयार करने में गति और सटीकता सुनिश्चित करता है और इस प्रकार, कर्मचारियों की दक्षता बढ़ाता है।

4. **बेहतर नियंत्रण की सुविधा:** प्रबंधन के दृष्टिकोण से, लेखांकन में कम्प्यूटर के उपयोग से अधिक नियंत्रण संभव है और अधिक जानकारी उपलब्ध हो सकती है। यह लेखांकन रिकॉर्ड में कुशल प्रदर्शन सुनिश्चित करता है।

5. **अधिक सटीकता:** कम्प्यूटरीकृत लेखांकन, रिकॉर्ड और विवरणों में सटीकता सुनिश्चित करता है। यह अभिलेखों में लिपिकीय त्रुटियों और चूक को रोकता है।

6. **एकरसता से राहत:** कम्प्यूटरीकृत लेखांकन दोहराए जाने वाले लेखांकन कार्यों को करने की नीरसता को कम करता है। जो थका देने वाले और समय लेने वाले होते हैं।

7. **मानकीकरण की सुविधा:** कम्प्यूटरीकृत लेखांकन दिनचर्या और प्रक्रियाओं को मानकीकरण प्रदान करता है। इसलिए, यह लेखांकन रिकॉर्ड में मानकीकरण सुनिश्चित करता है।

8. **गणितीय त्रुटियों को कम करता है:** कम्प्यूटर के साथ गणितीय कार्य करते समय, त्रुटियाँ वस्तुतः समाप्त हो जाती हैं जब तक कि सिस्टम में डेटा अनुचित तरीके से दर्ज न किया गया हो।



एकाग्रता से लक्ष्यों की ऊँचाइयों तक: छात्रों के लिए पढ़ाई में सफलता का सफर



शिवानी गोयल

असिस्टेंट प्रोफेसर-गणित विभाग

एक छात्र अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपनी पढ़ाई पर कैसे ध्यान केंद्रित कर सकता है, इसके लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं:

1. लक्ष्य तय करें:

★ सबसे पहले, छात्र को अपने लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से तय करना होगा। क्या है उसका उच्चतम लक्ष्य और उसे कैसे हासिल करना है, इसे विचार करें।

2. नियमित ध्यान और अभ्यास:

★ ध्यान और अभ्यास से मानसिक स्थिति में स्थिरता बनी रहती है। नियमित रूप से ध्यान और अभ्यास करना छात्र को पढ़ाई में एकाग्रता बनाये रखने में मदद करेगा।

3. समय का प्रबंधन:

★ एक अच्छा समय सारणी बनाएँ और उसमें स्टडी के लिए विशेष समय दें। समय का उपयोग सही तरीके से करने से अध्ययन में आराम से ध्यान लगा सकता है।

4. मनोबल बनाए रखें:

★ कई बार छात्र अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने में असमर्थ महसूस कर सकते हैं। ऐसे समय में सकारात्मक सोच बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

5. विषयों की संबंधितता:

★ छात्र को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसका ध्यान पढ़ाई में ही है और वह उन विषयों पर ज्यादा ध्यान देता है जिनमें उसकी रुचि है जो उसके लक्ष्यों से संबंधित हैं।

6. अवधि का प्रबंधन:

★ समय-अवधि (समय-सीमा) को सही तरीके से प्रबंधित करना महत्वपूर्ण है। एक विशेष समय निर्धारित करके छात्र निरंतर एक ही कार्य में विशेषाधिकार प्राप्त कर सकता है।

7. स्वस्थ जीवनशैली:

★ सही खानपान, नींद और स्वस्थ जीवनशैली बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह छात्र की ऊर्जा और ध्यान को सुरक्षित रखता है जिससे वह पढ़ाई में अधिक एकाग्रता ला सकता है।

8. सेल्फ-मैनेजमेंट:

★ अपने अध्ययन की प्रगति को निगरानी में रखने के लिए सेल्फ-मैनेजमेंट कौशल विकसित करें। यह आपको यह सुनिश्चित करने में मदद करेगा कि आप अपने लक्ष्यों की दिशा में हैं।

ये सुझाव छात्र को उसके अध्ययन में ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकते हैं उसे उसके लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल बना सकते हैं।

जीवन में विजेता कुछ अलग नहीं करते परन्तु वह चीजों को ही अलग तरीके से करते हैं।



Radioactivity



Dr. Hemlata Yadav

(Dept. of Chemistry)

C.L. Jain (PG) College, Firozabad

Due to nuclear instability, an atom's nucleus exhibits the phenomenon of radioactivity. Energy is lost due to radiation that is emitted out of the unstable nucleus of an atom. Two forces namely the force of repulsion that is electrostatic and the powerful forces of attraction of the nucleus keep the nucleus together. These two forces are considered extremely strong in the natural environment. The chance of encountering instability increases as the size of the nucleus increases as the mass of the nucleus becomes a lot when concentrated.

Henry Becquerel discovered radioactivity by accident. A uranium compound was placed in a drawer containing photographic plates, wrapped in a black paper. When the plates were examined later, it was found that they were exposed! Radioactivity can be seen in such form.

* Gamma Decay (Photons having high energy are emitted)

* Beta Decay (Emission consists of Electrons)

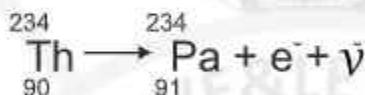
* Alpha Decay (Emission Consists of Helium nucleus)

Alpha Decay:- In alpha decay, an energetic helium ion (alpha particle) is rejected, leaving a daughter nucleus of atomic number two less than the parent and of atomic mass number four less than the parent. An example is the decay of abundant isotope of uranium ${}^{238}_{92}\text{U}$, to a thorium daughter plus an alpha particle.



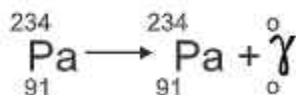
* **Beta- minus decay:-** In beta minus decay, an energetic negative electron is emitted, producing a daughter nucleus of one higher atomic number and the same mass number.

An example is the decay of the uranium daughter product thorium -234 into protactinium 234.



In the above reaction for beta decay $\bar{\nu}$ represents the anti neutrino.

* **Gamma decay-** A third type of radiation gamma radiation, usually accompanies alpha or beta decay. Gamma rays are photons and are without rest mass or charge. Alpha or beta decay may simply proceed directly to the ground state of the daughter nucleus without gamma emission, but the decay may also proceed wholly or partly to higher energy states (excited states) of the daughter nucleus. Gamma emission may occur as the excited state transforms to lower energy states of the same nucleus.



Advantage and Disadvantages of Radioactivity:-

Advantage:-

- * Gamma rays are used to kill cancerous cells and hence used in radiotherapy.
- * Cobalt-60 is used to destroy carcinogenic cells.



- * Gamma rays are used in scanning the internal parts of the body
- * Gamma rays kill microbes present in food and prevent it from decay by increasing the shelf life.
- * Age of the rocks can be studied using radio active radiations by measuring the argon content present in the rock.

Disadvantage:-

- * High dosage of radioactive radiation on the body might lead to death.
- * Radioactive isotopes are expensive.

मिसाइल मैन



डॉ. प्रदीप जैन

रसायन विज्ञान विभाग
सी.एल.जैन कॉलेज, फिरोजाबाद

अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु के एक गाँव धनुषकोडी में हुआ था। इनके पिता, मल्लुआरों को किराए पर नाव देते थे। कलाम ने अपनी पढ़ाई के लिए धन की पूर्ति हेतु अखबार बेचने का कार्य भी किया। डॉ. कलाम ने जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना किया। उनका जीवन सदा संघर्षशील रहने वाले एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जिसने कभी हार नहीं मानी तथा देशहित के पथ पर चलते रहे। 71 वर्ष की आयु में भी वे अथक परिश्रम करते हुए भारत को सुपर पावर बनाने की ओर प्रयासरत थे। भारत रत्न डॉ. अब्दुल कलाम भारत के 11 वें राष्ट्रपति बने। वे भारत रत्न से सम्मानित होने वाले तीसरे राष्ट्रपति बने हैं। भारत के मिसाइल कार्यक्रम के जनक, डॉ. कलाम ने देश को 'अग्नि' एवं 'पृथ्वी' जैसी मिसाइलें देकर, चीन एवं पाकिस्तान को इनकी रेंज में लाकर, दुनिया को चौंका दिया। एक बार एयरफोर्स के पायलट के साक्षात्कार में 9 वें नम्बर पर आने के कारण (कुल आठ प्रत्याशियों का चयन करना था) उन्हें निराश होना पड़ा था।

वे ऋषिकेश बाबा शिवानन्द के पास चले गए एवं अपनी व्यथा उन्हें सुनाई।

बाबा ने कहा:-

Accept your destiny and go ahead with your life. You are not destined to become an Airforce Pilot. What you are destined to become is not revealed now but it is predetermined. Forget this failure, as it was essential to lead you to your existence. Become one with yourself, my son. Surrender yourself to the wish of God.

बाबा शिवानन्द का कहने अर्थ यह था कि असफलता से निराश होने की आवश्यकता नहीं। यह असफलता आपकी दूसरी सफलताओं के द्वार खोल सकती है। तुम्हें जीवन में कहाँ पहुँचना है, इसका पता नहीं। आप कर्म करो, ईश्वर पर विश्वास करो।

डॉ. कलाम का जीवन, हर उस नवयुवक के लिए आदर्श प्रेरणा स्रोत है, जो अपने जीवन में एक असफलता मिलने पर ही निराश हो जाते हैं। डॉ. कलाम ने अपने सारे जीवन में निःस्वार्थ सेवा कार्य किया। उनका राष्ट्र प्रेम और उनका देशभक्ति का जब्बा हर भारतीय के लिए सबक एवं प्रेरणा का पुंज है और हमेशा रहेगा।





विद्यार्थी जीवन

उमेश कुमार

(असिस्टेंट प्रोफेसर-कम्प्यूटर विज्ञान
विभाग-गणित)

सुबह की पहली किरण में जाग उठते हैं छात्र, सपनों की उड़ान भरने, करने को तैयार हैं परिश्रम।
पैसों की कमी से होती है संघर्ष की बातें, खाने की छुट्टी पैसों की तकदीर की राह में।
पढ़ाई की किताबों से लिपटे हुए हैं वे, जीवन की कठिन राहों पर चलते हैं मुसीबतों के संग।
सोशल मीडिया की दुनिया में कभी हैं उदास, दोस्तों के साथ बिताने का वक्त बनता है खास।
दिनभर की मेहनत रात को भी जारी, सपनों को पूरा करने की है इच्छा तब भी जवाँ हैं जिम्मेदारी।
समर्पण है छात्रों की तकदीर की कुंजी, मुश्किलों में भी बढ़ते हैं जीवन की मीठी सीरी।
जीवन के सफर पर चलते हैं छात्र ये, संघर्षों को हार के, करते हैं अपने सपनों की पुकार।
धन की कमी बुरा नहीं मानते वे, संघर्षों से जूझकर पा लेते हैं जीवन के सबसे महत्वपूर्ण सीख।
जीवन का सफर छात्र के साथ संघर्ष की बातें हर कदम से साथ।
किताबों की चिंगारी जलती रहती रातों में, सपनों की दुनिया है उसकी राहों में।
पैसों की कमी सिर पर है बोझ, मेहनत का जवाब है उसकी आँखों में।
उड़ान भरता है, सपनों की ऊँचाइयों को, मुश्किलों की बवाल में है उसका हौसला बुलंद।
रास्तों में आंधी और है तूफानों की बारिश, पर छात्र है संघर्ष का वीर है जीने की उम्मीद में।
कहानी बनती है, हर दर्द से संघर्ष में, छात्र का सफर है जीवन की महकती कहानी में।
है हिम्मत तो बुराई को मिटा कर देख, इलाही से नफरत को हटा कर देख।
जोश कितना है तुझमें मैं भी तो देखुं मानव, गरीबी, लाचारी, भ्रष्टाचारी घटा कर देख।
है आदत अच्छी तो किस्मत बना देती है, हर खुशी इस दिल को दिला देती है।
लग गई गर बुरी आदत तुम्हें तो, मुसीबत के कई तंबू तना देती है।
आलस दिखाने से कुछ हासिल नहीं होगा, इस तरह तू कभी भी आकिल नहीं होगा।
पड़ा रह जाएगा कीड़े मकोड़ों की तरह, जहाँ के महान लोगों में दाखिल नहीं होगा।
हौसले से दोस्ती बनाकर रखना, ईमानदारी दिल में बचा कर रखना।
चाहे लाख आयें मुसीबतें लेकिन, मुस्कराहट होठों पर सजा कर रखना।

अगर मुसीबतें हैं, तो मुस्करा के चल, आँधियों को पैरों तले दवा के चल।

मंजिलों की औकात नहीं तुझसे दूर रहने की विश्वास इस कदर खुद में जगा के चल



अहमद का सपना



शाहरुख

असिस्टेंट प्रोफेसर, कम्प्यूटर विभाग

17 अक्टूबर 1817 ई0 में दिल्ली के सैयद परिवार में एक लड़के का जन्म हुआ जिसका नाम अहमद रखा गया। अहमद को बचपन से ही पढ़ने - लिखने का बहुत शौक था।

22 वर्ष की अवस्था में ही पिता की मृत्यु के बाद परिवार को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, पिता के इस संसार से जाने के बाद टूट गया किन्तु हार न मानी वह कठिन परिश्रम करता रहा तथा शिक्षा ग्रहण करना नहीं छोड़ी।

उसने 1830 में ईस्ट इण्डिया कंपनी में लिपिक के पद पर कार्य करना शुरू किया। सन् 1841 में मैनपुरी में उप-न्यायाधीश की योग्यता हासिल की और विभिन्न स्थानों पर न्यायिक विभागों में काम किया।

सन् 1888 में नाइटहुड की उपाधि से सम्मानित किये गये। नाइटहुड की उपाधि वह उपाधि होती है जिसके प्राप्त होने के बाद हम अपने नाम के आगे *मिस्टर के बजाये सर लगा सकते हैं।* और फिर वह सर सैयद अहमद खाँ के रूप में जाने गये।

उन्होंने महसूस किया कि भारतीयों को इन अंग्रेजों की गुलामी से नहीं निकाला गया तो एक दिन हम बर्बाद हो जाएंगे और हम कभी न उठ सकेंगे। उनकी दूर दृष्टि अंग्रेजों के षडयंत्र से अच्छी तरह से वाकिफ थी। उन्हें मालूम था कि अंग्रेजी हुकूमत भारत पर स्थापित हो चुकी है और सर सैयद अहमद खाँ ने अंग्रेजों को हराने के लिए शैक्षिक मैदान को बेहतर समझा। इसलिए उन्होंने अपने बेहतरीन लेखों के माध्यम से शिक्षा व संस्कृति की भावना जगाने का प्रयास किया जिससे शैक्षिक मैदान में वे हम पर हावी न हो सके।

उनका यह मानना था कि हम कलम से वे सब हासिल कर सकते हैं जो हम किसी और वस्तु द्वारा हासिल नहीं कर सकते।

सर सैयद अहमद खाँ भारत को शिक्षित देश बनाना चाहते थे और बहुत हद तक वह इसमें सफल भी हुए। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, ऑल इण्डिया मुहमदन एजुकेशन कॉन्फ्रेंस जैसे कई संस्थाओं की स्थापना की।

वह भारत को पूर्णतः शिक्षित बनाना चाहते थे। आइए हम सब मिलकर सर सैयद अहमद खाँ के इस सपने को साकार करें और भारत को पूर्णतः शिक्षित बनाने में सहयोग करें।





अतिरिक्त कक्ष

दीपक कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर रसायन विज्ञान विभाग

भागीरथ दौड़ता हुआ बदहवास कक्षा के अंदर आया और बोला, "मास्साब, मास्साब! कौनऊ अधिकारी प्रधान जी के चौराहे पे मोटरगाड़ी से आए हैं" मास्टर जी अव्यवस्थित सामान की तरह कुर्सी पर पड़े थे, थोड़ा घबराए स्वर में बोले, "अरे कौन अधिकारी, अब कौन आ गया, अभी कुछ दिन पहले ही तो सारे रजिस्टर चेक किए थे।" मास्टर साहब ने खुद को व्यवस्थित करते-करते कहा, "खैर लो पचास रुपये और जाकर छुटकन की दुकान से ठण्डी पेप्सी दालमोट और समोसे ले आओ", मास्टर साहब ने बड़े मशक्कत के बाद पूरी जांच करके जेब का सबसे प्राचीन और जीर्ण नोट निकाल के भागीरथ के हाथ पर रख दिया। "साहब पेप्सी कौन, काली कि हरी वाली?" भागीरथ ने नोट को चारों तरफ पलट कर पूछा। माथे पर शिकन लिए मास्टर साहब बोले, "अरे! ले आओ बस, कौन सा वो छोड़ने वाले हैं जो भी लाओं पी ही लेंगे"। चिलचिलाती धूप में भागीरथ ने सूरज की तरफ देखा, पसीना पोछ और निकल गया। "सब लाइन से बैठ जाओ", मास्टर साहब ने ऐसे ऊँचे स्वर में आवाज लगाई मानो कोई कमांडर अपनी सेना को आदेश दे रहा हो।

पी-पी, एक सफेद गाड़ी ने विद्यालय के दरवाजे पर हॉर्न मारा और अंदर ऐसे घुसी मानो कमरे के भीतर ही पार्क होगी। हरीशचन्द्र जी! आगे वाले सीट से उतरे आदमी ने आवाज लगाई। "जी सर, आया बस आया!" अंदर से भागते हुए मास्टर साहब ने आवाज लगाई। पीछे से बैठे अधिकारी बोले, "भाई हरीशचन्द्र जी, बधाई हो! अतिरिक्त कक्ष की स्वीकृति मिल ही गई"। अगले ही पल तेवर बदलते हुए आदेशात्मक कंठ में फिर बोले "बस मानकों का ध्यान रखिएगा", "जी, एकदम सर" मास्टर साहब ने कुछ दबे स्वर में कहा और गाड़ी पर खण्ड शिक्षाधिकारी की पट्टी कुछ हसरत भरी नजरों से निहारने लगे। "लाइये रजिस्टर ले आइये", बगल से ड्राइवर ने मास्टर साहब के स्वप्न मे बाधा डालते हुए इशारा किया सुनकर मास्टर साहब अंदर कमरे में गए और रजिस्ट्रों की उठा पटक करते हुए आए और बोले "लीजिए सर! रजिस्टर" इससे पहले कि मास्टर साहब कुछ सहज होते ड्राइवर ने कहा "सर कह रहे हैं आज बहुत गर्मी है हरीशचन्द्र जी और अवसर भी इतना अच्छा है कक्ष की स्वीकृति भी मिल गई है तो"....। बाकी मानो न कहकर भी सब कुछ समझा दिया गया हो, स्वीकार्यता के स्वर में हरीशचन्द्र जी ने कहा "हाँ, हाँ बस कुछ आता ही होगा"। तभी अंदर से अधिकारी जी बोले "वो सब तो ठीक है, लेकिन क्या आप बड़े साहब की ही बातों को गंभीरता से लेते हैं सुना है कल ही आप पूरे साहब तक पहुँचा आये हैं लगता है आप खुद चाहते हैं कि आपके विद्यालय



की प्रतिदिन की रिपोर्ट ही मुझे लेनी पड़े"। (श्रीमान जी का सीधा मतलब 1 लाख से था) नहीं, सर मास्टर जी ने कुछ झेंपते हुए कंपकंपाये स्वर में बोला और बड़े बुरे मन से फिर से भीतर किसी उधेड़ बुन में लग गये।

मास्टर जी भीतर अपनी डायरी में कुछ हिसाब लगाने लगे ... 1 लाख बी.एस.ए. सर का 25 हजार प्रधान जी, 25 हजार तिवारी जी (शिक्षक संघ नेता जी), 50 हजार समिति, 50 हजार बी.डी.ओ. साहब, अब ये 50 हजार ए.बी.एस.ए. सर कुल मिलाकर 3 लाख और 50 हजार देकर तो मैंने जैसे तैसे ये स्वीकृति ली ही थी। मास्साब, मास्साब ! (बाहर से कोई आवाज आई) हरीशचन्द्र जी ने बाहर आकर देखा तो कोल्ड ड्रिंक और गरमागरम समोसे का नाश्ता चालू था। ड्राइवर के नज़दीक जाकर एक भारी सफेद लिफाफा उनकी गाड़ी में रख दिया। "समोसे ठीक हैं न सर?" ही..ही.. खीज भरी एक हँसी के साथ मास्टर साहब ने सवाल किया। "समोसे छोड़िये 5 लाख रुपये स्वीकृत हुए थे हरिशचन्द्र जी! आशा है अब आपको शिकायत नहीं होगी कि विभाग और सरकार ने आपके आवेदन को अनदेखा कर दिया है। अब जल्द से जल्द तैयार करिए अतिरिक्त कक्ष और बनाइये बच्चों का भविष्य।" चलो, आलोक! बहुत धूप है यहाँ, ड्राइवर की ओर इशारा कर हाथ पोंछते हुए अधिकारी जी गाड़ी में बैठ कर निकल गए।

एक लिफाफा भागीरथ के तरफ बढ़ाते हुए मास्टर साहब ने कहा, ये लो, भागीरथ! कुछ पैसे कक्ष से बच गये हैं तुम रख लो कक्ष फिर कभी बन जाएगा।" नहीं मास्साब, हमार बच्चा लोग भी हियाँ पढ़त है, ई बच्चा लोगन का पैसा लेके हम नरक न जाई।" भागीरथ ने विनम्रता से जवाब दिया।

तभी कोमल दौड़ती हुई मास्टर साहब के पास आई और बोली "सर जी, सर जी अब तो बड़े सर भी आ गए, हम नए कमरे में कब से बैठेंगे?" बड़े साहबों के छुटपन और भ्रष्ट व्यवस्था के सामने लाचार खड़े 'आधुनिक हरीशचन्द्र' लगभग बुझी आशा के साथ बच्चे से बोला जैसे ही बन जायेगा अपना अतिरिक्त कक्ष।



संसार के महान विद्वान (डॉ. भीमराव अम्बेडकर)

दिलीप कुमार

(बी.एससी- प्रथम सेमेस्टर)

भारत रत्न बाबा साहेब उर्फ डॉ. भीमराव अम्बेडकर संसार के सबसे ज्यादा शिक्षा प्राप्त व्यक्ति हैं। बाबा साहेब के पास 32 डिग्रियाँ हैं जो आज के जमाने में किसी के लिए प्राप्त करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा लगता है। यह वही बाबा साहेब हैं जिन्होंने भारत का संविधान बनाया था जो लिखित संविधानों में सबसे बड़ा है। फिर भी आजकल लोग संविधान में गलती निकाल देते हैं। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसके बारे बाबा साहेब के पास जानकारी न हो बाबा साहेब जब कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़ते थे तब उन्होंने दो हजार प्राचीन ग्रंथ खरीदे और लंदन के द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान बाबा साहेब ने इतनी पुस्तके और खरीदी। ये पुस्तके तब इतनी हो गई थी कि ये 32 संदूको में आर्यीं। यहाँ तक ही सीमित नहीं रहा तो फिर इन्होंने लंदन की लाइब्रेरी में 1000 दिन में 16000 पुस्तकें पढ़ने का विश्व रिकार्ड भी बनाया। जब कभी भी संसार के महान विद्वानों का नाम लिया जायेगा तब उनमें बाबा साहेब उर्फ डॉ. भीमराव अम्बेडकर का नाम भी बड़े सम्मान से लिया जायेगा। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ही पहले ऐसे भारतीय हैं जिनकी प्रतिमा कोलंबिया विश्वविद्यालय में लगी है। और कोलंबिया विश्वविद्यालय वाले भी गर्व करते हैं कि संसार का महान विद्वान हमारा छात्र था। यह हम सब भारत-वासियों के लिए बड़े गर्व की बात है और हम सब को सुनकर भी बड़ी खुशी होगी जब हमारे देश में भारत रत्न बाबा साहेब का जन्म दिन विश्व ज्ञान दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

अभ्यास का महत्व

कुलदीप

(एम.एससी.-तृतीय सेमेस्टर)

प्राचीन समय में विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर ही पढ़ा करते थे। बच्चे को शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरुकुल में भेजा जाता था। बच्चे गुरुकुल में गुरु के सानिध्य में आश्रम की देखभाल किया करते थे और अध्ययन भी किया करते थे।

वरदराज को भी सभी की तरह गुरुकुल भेज दिया। वहाँ आश्रम में अपने साथियों के साथ घुलने मिलने लगा।

लेकिन वह पढ़ने में बहुत ही कमजोर था। गुरुजी की कोई भी बात उसके बहुत कम समझ में आती थी। इस कारण सभी के बीच वह उपहास का कारण बनता था। उसके सारे साथी अगली कक्षा में चले गए लेकिन वो आगे नहीं बढ़ पाया।

गुरुजी ने भी आखिर हार मान कर उसे बोला, “बेटा वरदराज! मैंने सारे प्रयास करके देख लिए हैं। अब यही उचित होगा कि तुम अपना समय बर्बाद मत करो। अपने घर चले जाओ और घरवालों की काम में मदद करो।”

वरदराज ने भी सोचा शायद विद्या में ही किस्मत में नहीं है और भारी मन से गुरुकुल से घर के लिए निकल गया। दोपहर का समय था रास्ते में उसे प्यास लगने लगी। इधर उधर देखने पर उसने पाया कि थोड़ी दूर पर ही कुछ महिलाएँ पानी भर रहीं थीं। वह कुएं के पास गया।

वहाँ पत्थरों पर रस्सी के आने जाने के निशान बने हुए थे, तो उसने महिलाओं से पूछा, “यह निशान आपने कैसे बनाए।”

तो एक महिला ने जबाब दिया, “बेटे यह निशान हमने नहीं बनाए। यह तो पानी खींचते समय इस कोमल रस्सी के बार-बार आने जाने से ठोस पत्थर पर भी ऐसे निशान बन गए हैं।”

वरदराज सोच में पड़ गया। उसने विचार किया कि जब एक कोमल से रस्सी के बार-बार आने जाने से एक ठोस पत्थर पर गहरे निशान बन सकते हैं तो निरंतर अभ्यास से विद्या ग्रहण क्यों नहीं कर सकता।



वरदराज ढेर सारे उत्साह के साथ वापस गुरुकुल आया और अथक कड़ी मेहनत की। गुरुजी ने भी खुश होकर भरपूर सहयोग किया। कुछ ही सालों बाद यही मंदबुद्धि बालक वरदराज आगे चलकर संस्कृत व्याकरण का महान विद्वान बना। जिसने लघु सिद्धान्त कौमुदी मध्य सिद्धान्त कौमुदी, सार सिद्धान्त कौमुदी, गीर्वाण पद मंजरी की रचना की।

दोस्तों अभ्यास की शिक्षा का तो कहना ही क्या है। यह आपके हर सपने को पूरा करेगी। अभ्यास बहुत जरूरी है वह चाहे वो खेल में ही हो या पढ़ाई में या किसी और चीज में। बिना अभ्यास के आप सफल नहीं हो सकते हो। अगर आप बिना अभ्यास के केवल किस्मत के भरोसे बैठे रहोगे, तो आखिर में आपको पछतावे के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगेगा। इसलिए अभ्यास के साथ धैर्य, परिश्रम और लगन रखकर आप अपनी मंजिल को पाने के लिए जुट जायें।



मुश्किलें

आकाश कुमार

(एम.एससी-तृतीय सेमेस्टर)

एक बार की बात है। किसी गाँव में एक लड़का रहा करता था। उस लड़के की उम्र करीब 15 साल की थी। उसके पिता एक किसान थे। वही उसकी माँ अपने घर के काम के अलावा दूसरों के घर का काम किया करती थीं।

इस लड़के का नाम राकेश था। राकेश अभी एक छात्र था। वह भी हाईस्कूल में पढ़ रहा था। इधर पूरे देश में विकास हो रहा था लेकिन उसके गाँव में विकास नहीं हो पा रहा था।

इसका कारण उसके गाँव के कुछ अधिकारी थे। उनके कारण ही गाँव की सड़क नहीं बन पा रही थी। जब भी बरसात का मौसम आता था तो राकेश के पिता को नदी पार कर अपने घर से खेत की ओर जाना पड़ता और खेत से नदी पार करके घर आना होता था।

गाँव में रहने वाले बहुत से लोगों ने कोशिश तो किया कि गाँव की सड़क बन जाए लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा था। एक बार गाँव में कुछ गाड़ी एक दूसरे की पीछे आ रही थी।

हर गाड़ी के ऊपर बल्व लगी थी और आवाज करने के लिए स्पीकर। उस गाड़ी के काफिला के बीच में एक गाड़ी थी, जिस गाड़ी में उस जिले के डीएम बैठे थे।

डीएम अपनी गाड़ी से उतरे। उनके सामने वह लोग भी हाजिर हो गए जो अपना काम सही से नहीं कर रहे थे डीएम ने उन्हें बहुत कुछ कहा अगले दिन ही सड़क बनने लगी। इसके साथ ही उस नदी के ऊपर भी पुल बनने लगा। जिस नदी को पार करके राकेश के पिता अपने खेत पर जाते थे।

अब राकेश को समझ में आ गया उसे पढ़ कर डीएम ही बनना चाहिए। उसके दिमाग में था कि अगर वह डीएम बन जाएगा तो अपने गाँव की तरह दूसरे गाँव का विकास कर सकता है।

उसने पढ़ाई में खूब मेहनत की। उसके 10 में 75% ही आए। फिर भी उसने हिम्मत को नहीं छोड़ा। वह अगली परीक्षा की तैयारी करने लगा।

यहाँ पर उसकी मेहनत उसकी साथी बनी। उसने 12 में 90% हासिल किया। फिर भी वह न तो खुश हुआ और न ही उदास।

अभी वह कॉलेज में जाने वाला ही था कि उसके पिता का एक पैर एक दुर्घटना में खराब हो गया। इससे वह



अंदर से टूट जाता है।

अब उसके कंधे पर घर को चलाना भी था और पढ़ाई को करना भी था। अब वह कॉलेज नहीं जा पाता है। वह अपने गाँव में रह कर ही खेती करता है।

करीब दो साल इसी तरह से बीत जाते हैं। अब वह लड़का अपने गाँव का काफी अमीर व्यक्ति बन चुका होता है। इसका कारण उसकी कड़ी मेहनत थी।

जब सभी लोग अपने खेत से काम करके चले आते थे तभी वह अपने खेत में काम किया करता था। इसके साथ ही वह और दूसरे काम भी किया करता था। वह रात्रि को पढ़ाई भी किया करता था।

अब वह अपने गाँव को छोड़कर शहर की ओर जाता है। वह शहर पढ़ाई करके डीएम बनने के लिए जा रहा था। उसके पास इतना पैसा था कि उसके माता पिता और वह खुद करीब 5 साल तक बिना कोई काम करे खा सकते थे।

पर वह कहते हैं न कि सफलता मिलना इतना आसान नहीं होता है। राकेश खूब मेहनत से पढ़ाई करता है। पर वह पहली बार में सफल नहीं हो पाता है। अब उसे 5 साल के स्थान पर 7 साल लगने वाले थे।

वह कुछ दिन इसको सोचकर काफी परेशान रहता है। लेकिन अपनी पढ़ाई को बंद नहीं करता है। अब वह अपनी पढ़ाई में दुगुनी मेहनत करने लगता है।

इधर उसके घर का सारा पैसा खत्म हो जाता है। अब उसके घरवालों के पास खाने-पीने के लिए कुछ नहीं था। उनकी सारी जमीन गिरवी रखी जा चुकी थी।

मानो उसके घर आफत आ चुकी थी। राकेश के माता-पिता को दो दिन पर भी कुछ खाने को नहीं मिलता था। इधर राकेश अपनी पढ़ाई में खूब मेहनत कर रहा था।

एक दिन राकेश के गाँव में फिर से कुछ गाड़ी आती है। जो काफी आवाज कर रही थी। यह गाड़ी राकेश के घर के दरवाजे पर रूकती है।

अब तक गाँव के सभी लोग वहाँ आ गए। सभी देख कर हैरान थे कि राकेश अब एक डीएम है। यहा कहानी यही खत्म होती है। सफलता के रास्ते में बहुत सी मुश्किलें आती है। पर वही इंसान सफल हो पाता है, जो इन मुश्किलों का सामना करता है और आगे बढ़ता है।

आज की नारी

तृप्ति पाराशर

(एम.एससी. केमिस्ट्री- सेकेण्ड ईयर)

मैं आज की नारी हूँ, इतिहास रचने वाली हूँ, पढ़ जिसे गर्व महसूस करे, वो इतिहास बनाने वाली हूँ

नारी हूँ आज की, खुले आसमान में उड़ना चाहती हूँ मैं, बांध अपनी जिम्मेदारियों का जूड़ा अपने सपनों को पूरा करना चाहती हूँ मैं, अब अपने जुल्मों का शिकार नहीं बना सकता कोई मुझे

अपने गगन को सितारों से सजाने वाली किरण बेदी हूँ मैं। न मजबूर हूँ मैं, ना लाचार हूँ मैं अंतरिक्ष में परचम लहराने वाली कल्पना चावला हूँ, न डरती अब मैं खाई से, न डरती ऊँचाई से

पर्वत के शिखरों पर तिरंगा फहराने वाली अरूणिमा सिन्हा हूँ मैं हाँ मैं आज की नारी हूँ

आवाज उठाने वाली हूँ होगा अति जुल्म अब नारी पर, अब इंसाफ की बारी है

बहुत हो गया त्याग नारियों का, अब नहीं होगा बलात्कार नारियों का

पतन होगा अब दरिदों और अत्याचारियों का, मैं आज की नारी हूँ इंसाफ दिलाने आई हूँ।

अब अबला नहीं सबला नारी, अपने पैरों पर खड़ी स्वतन्त्र जिन्दगी जीने वाली है,

खुले आसमान में उड़ने वाली है। मैं नारी हूँ, अपने समाज का निर्माण करने वाली हूँ मैं,



हौसला



ललितेश कुमार

एम.एससी-प्रथम सेमेस्टर केमिस्ट्री

आओ कुछ ऐसा काम कर जाएं
आसमां से भी ऊँचा नाम कर जाएं
मेहनत की कलम से लिख जाएं किस्मत अपनी
आज ही नई शुरुआत की जाए

क्यों भरोसे बैठे अपनी किस्मत के
हवाओं से भी ज्यादा रफ्तार की जाए
सुनी सुनाई बातों पर भरोसा क्यों करें
आओ मेहनत से हासिल मुकाम कर जाए

दम भर लो हौंसले में इतनी
कि जिंदगी में कभी हार न पाए
मिल जाए हमें वही मंजिल
जिसके लिए हम कदम बढ़ाएँ

सूरज की रोशनी सी चमकें
कद से ऊँचे ओहदे को सलाम की जाए
आओ कुछ ऐसा काम कर जाएं
आसमां से भी ऊँचा अपना नाम कर जाएं

छोड़ दो वक्त के पहिए गिनना
अब शुरू करो चलना तुम
कब तक थामें रहोगे ऐसे
वक्त और हालात पर

मन से जो ना हारे तो तुम
तन से भी न हारोगे
किस्मत से तुम लड़-के
वक्त अपना तुम संवारोगे

गुरु – शिष्य

रैनु

(तृतीय सेमेस्टर)

एक बार एक शिष्य ने विनम्रतापूर्वक अपने गुरुजी से पुछा - 'गुरुजी कुछ लोग कहते हैं कि जीवन एक संघर्ष है, कुछ अन्य कहते हैं कि जीवन एक खेल है और कुछ जीवन को एक उत्सव की संज्ञा देते हैं। इनमें कौन सही हैं ? गुरुजी ने तत्काल बड़े ही धैर्यपूर्वक उत्तर दिया -

पुत्र जिन्हें गुरु नहीं मिला उनके लिए जीवन संघर्ष है;



संघर्ष

विनीत कुमार

(एम.एससी.-प्रथम सेमेस्टर कोमिस्ट्री)

संघर्ष ना छोड़ हिम्मत ना हार
चल अपनी राहें, मंजिल को संवार

तुझे टूटना नहीं है झुकना नहीं है
तूफान के आगे झुकना नहीं है
अपनी जीवन नैया का तू खुद है खेवनहार

राहों में देख काँटि तू डर ना जाना
लक्ष्य पाने से पहले तू ठहर ना जाना
देख वो सामने तुझे मंजिल रही पुकार

एक दिन किस्मत संवर जाएगी
मेहनत तेरी वो रंग लाएगी
जीत जाएगा तेरा संघर्ष दुनिया हार जाएगी

संघर्ष न छोड़ किस्मत न हार
चल अपनी राह मंजिल को संवार

गजल

अंकित कुमार

(बी.एससी-तृतीय सेमेस्टर)



चलो अपने दिल की नफ़रत मिटाएँ।
बनके सूरज अंधेरा हटाएँ।
जिनसे हुआ है झगड़ा कभी भी,
घर उनके जाकर उनको मनाएँ।
बैठें बगल में कई लोग आकर,
द्वारे पर अपने अलाव जलाएँ।
मुस्काये चेहरे मन हो गुलाबी,
गीत कोई ऐसा मधुरिम सुनाएँ।
बच्चों का सच पे भरोसा हो कायम,
नेकी पर चलने की पुस्तक पढ़ायें।
लेकर के 'अंकित' अपने घरों से,
दुखी बस्तियों में खुशियां लुटाएँ।



सही दिशा



खुशी शर्मा

(एम.एससी. गणित-द्वितीय सेमेस्टर)

एक व्यक्ति सामान लेकर किसी स्टेशन पर उतरा उसने एक टैक्सी वाले से कहा कि मुझे शिव मंदिर जाना है। टैक्सी वाले ने कहा- दो सौ रुपये लगेंगे। उस व्यक्ति ने बुद्धिमानी दिखाते हुए कहा-इतने पास के 200 रुपये, आप टैक्सी वाले तो लूट रहे हो। मैं अपना सामान खुद ही उठाकर चला जाऊँगा।

वह व्यक्ति काफी दूर तक सामान लेकर चलता रहा। कुछ देर बाद पुनः वही टैक्सी वाला दिखा अब उस आदमी ने फिर टैक्सी वाले से पूछा-भाई अब तो मैंने आधा से ज्यादा दूरी तय कर ली है, तो आप कितने रुपये लेगें ? टैक्सी वाले ने जबाव 400 रुपये दे देना। इस आदमी ने फिर कहा- पहले दो सौ रुपये और अब चार सौ रुपये ऐसा क्यों ? टैक्सी वाले ने जबाव दिया- महोदय, इतनी देर से आप शिव मंदिर की विपरीत दिशा में चल रहे हैं, जबकि शिव मंदिर तो दूसरी तरफ है। उस व्यक्ति ने कुछ भी नहीं कहा और चुपचाप टैक्सी में बैठ गया। इसी तरह जिंदगी के कई मुकाम में हम किसी चीज को बिना गंभीरता से सोचे सीधे काम शुरू कर देते हैं ओर फिर अपनी मेहनत और समय को बर्बाद कर उस काम को आधा ही करके छोड़ देते हैं। अतः जो भी कार्य आप करें उस पर सोच-विचार करें कि वो आपके लक्ष्य का हिस्सा है कि नहीं।

हमेशा एक बात याद रखें कि दिशा सही होने पर ही मेहनत रंग लाती है। गलत दिशा में मेहनत का कोई लाभ नहीं मिलता। अतः सही दिशा तय करें और आगे बढ़ें।



कुछ सुविचार

रूचि

(बी.एससी.-प्रथम सेमेस्टर)

मेहनत इतनी खामोशी से करो, कि कामयाबी शोर मचा दे।

इतिहास कॉलेज टॉपर नहीं लिखते, इतिहास तो हमारे जैसे सनकी लिखते हैं।

किसी को घर मिला, किसी को मकान मिला, मैं घर में सबसे छोटी थी,

इसलिए मुझे मेरी माँ का प्यार मिला

अगर हम खुदा पर विश्वास करेंगे, तो उतना ही मिलेगा, जो नसीब में लिखा है,

अगर खुद पर विश्वास करोगे, तो जो तुम खुद चाहते हो खुदा भी वही लिखेगा।

सफलता के शिखर पर पहुँचने के लिये, तकदीर की नहीं हौंसले की जरूरत होती है।

जय हिन्द, जय भारत, वंदे मातरम!

नेक इरादे रखो हमेशा, धरती अम्बर जोड़ सकोगे, अपने पर विश्वास अगर हो, धारा को भी मोड़ सकोगे।



“स्कूल” (खुशियों से भरा हुआ पिटारा)

अद्विक दुबे

(बी.एससी.-पंचम सेमेस्टर)

“स्कूल और उससे जुड़ी कुछ यादगार यादें जिसे हम चाहकर भी भुला नहीं सकते एक ऐसा यादों का पिटारा जिसे हम जब भी खोले बिना मुस्कुराए बन्द नहीं कर पाते। हम अपनी जिंदगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा स्कूल में बिताते हैं मुझे आज भी अपने स्कूल के दिन याद हैं कि मैं स्कूल जाने में कितना रोया करता था। और पता नहीं कब वो मेरा उदास सा चेहरा खिलखिलाती हंसी में बदल गया पता ही नहीं चला। वो दोस्तों के साथ-साथ स्कूल जाना वहां लंच में खाना जल्दी खा लेना ताकि खेल सके, वो पानी की बोतल पीने से ज्यादा होली खेलना, सब बहुत याद आता है स्टेज पर बस थॉट बोलने से ये लगता था की आज कितना प्रिंसिपल सर तारीफ कर देते थे तो लगता था कि गोल्ड मेडल जीत लिया। माना कि पहले बहुत बड़े एक्सपेरिमेंट नहीं करते थे लेकिन पेंसिल के छिलके में दूध मिलाकर रबड़ जरूर बनाते थे। सच कहूँ तो वही दिन थे जब हम खुलकर हंसा करते थे आज जब हम कॉलेज जाते हैं तो लगता है प्रोजेक्ट बनाना है क्लास लेनी हैं और जब स्कूल जाते थे तो लगता था कि प्रार्थना के लिए लेट ना हो जाऊँ अगर प्रिंसिपल सर ने थॉट के लिए बुलाया कहीं भूल न जाऊँ। सच कहूँ तो वही पल थे जब हम जिंदगी जिया करते थे ना कि काटा करते थे क्या जल्दी-जल्दी बड़े हो गए ना हमें पता ही नहीं चला कब हाफ पैंट से फुल पैंट में आ गए हम वो गर्मी कि छुट्टियाँ वो संडे का इंतजार वो हाफ पीरियड कि खुशी वो लड़ाई झगड़े चोक चुराना डस्टर छुपाना और उसी डस्टर को अपनी फेवरेट मैम को दे देना वो पानी पीने जाने के बहाने पूरे स्कूल का चक्कर लगाना इतनी सारी यादें है दो पन्नों में कैसे खत्म कर दूँ। यह तो यादों का पिटारा है जिसे हम जब भी खोलेंगे बिना मुस्कुराए बन्द नहीं कर पाएँगे।

मेहनत

विशाल शर्मा

(एम.एससी-गणित)

वो लोग बहुत कम होते हैं, जो मेहनत से न डरते हैं।

कुछ न आने पर भी वो, कोशिश जरूर किया करते हैं

उन बच्चों की क्या बात कहूँ, जो हार से कभी न डरते हैं।

बस ऐसे बच्चे ही आगे बढ़ा जरूर करते हैं

जान समझ कर इन पक्ति को, मैं एक बात बताता हूँ

कि जो मेहनत करते हैं, आगे जरूर बढ़ते हैं

क्योंकि जन्म से न कोई कलाम

और न ही सिंकदर पैदा हुआ करते हैं।



पशु सुरक्षा

नेहा बृजमोहन

(बी.एस.सी-प्रथम सेमेस्टर)

पशु हमारे समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है वह बेजुबान निर्दोष है। मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया कि अपने फायदे के लिए पशुओं को हानि पहुँचाता है। जबकि पशु मनुष्य को बिना वजह हानि नहीं पहुँचाते हैं। पशु वफादार होते हैं। वह मनुष्य के द्वारा उस पर किये गए एक उपकार को भी याद रखते हैं। यदि मनुष्य पशुओं से अच्छा व्यवहार करे तो पशु भी अच्छा व्यवहार करेंगे। अधिकतर आवारा पशु जैसे- गली के कुत्ते, गली में घूमने वाले सांड, आवारा बिल्ली आदि का कुछ स्वार्थी, निर्दयी मनुष्यों के कारण जीवन यापन करना मुश्किल है। आज के दौर में मनुष्य अपने वाहनों से भी उन्हें नुकसान पहुँचाता है। यदि किसी पशु पर मनुष्य अपना वाहन चढ़ा दे तो वह उसे बिना देखे मरने के लिए छोड़ देता है। यह भी नहीं देखता उसे कितनी लगी है। आस-पास के लोग भी कुछ नहीं कहते हैं। यही यदि किसी मनुष्य के साथ हो तो जुर्माना भरवाया जाता है। और यदि कोई पशु अपनी नादानी के कारण किसी मनुष्य को कोई नुकसान पहुँचा दे तो इस घटना को बढ़ा चढ़ाकर बताया जाता है। उस पशु को पागल बता देते हैं। इससे उसका जीना मुश्किल हो जाता है। पागल जानवरों की गाड़ी उठाकर ले जाती है, जहाँ उन्हें कैद कर लिया जाता है। मनुष्य एक बार को विदेशी पशुओं को पालना पसंद करता है पर आवारा पशुओं को नहीं पालता, क्योंकि विदेशी पशु महँगे आते हैं जितना महँगा पशु उतनी उनकी शान ज्यादातर पशुओं की भूख के कारण तथा दुर्घटना के कारण मौत होती है। जब मनुष्य आवारा पशुओं का भला नहीं कर रहा तो बुरा भी न करे। हमें अपने आस-पास के पशुओं की सुरक्षा करनी चाहिए।

शिक्षक का अर्थ



नेहा गुप्ता

(बी.एस.सी-प्रथम सेमेस्टर)

शि- शिखर का रास्ता दिखाने वाला

क्ष- क्षमा, दया की भावना रखने वाला

क- कमियों को दूर करने वाला।

“जरूरी नहीं रोशनी चिरागों से हो, शिक्षा से भी घर रोशन होते हैं।”

मंजिल मिले ना मिले, ये तो किस्मत की बात है।

हम कोशिश भी न करें, ये तो गलत बात है।

जिंदगी जख्मों से भरी है, वक्त को मरहम बनाना सीख लो

हारना है एक दिन मौत से, फिलहाल जिंदगी जीना सीख लो।

“सबसे शक्तिशाली हथियार शिक्षा है, जिसका प्रयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।”

“अतीत से सीखो, भविष्य को देखो, लेकिन वर्तमान में जियो।”



एक रीति ऐसी भी

संदली शर्मा

(बी.एस.सी-तृतीय सेमेस्टर)

गर्भ में आई वो, एक खरपतवार के जैसे। पैदा होने से पहले न सोचा उसके बारे में,
झुक गया सिर सबका आने पर उसके आई आवाज धीमे से, लड़की हुई है।
माँ ने भी कोसा विधाता को, जैसे सूखे में ना हुई हो बरसात।
बचपन से शिक्षा के नाम पर सिखा दिया चूल्हा चौका, देदी खिलौने में भी गुड़िया,
बन्दूक से ना था वास्ता। समझाया उसे हर दम कम है वो, लड़कों की बराबरी ना दी करने,
हुई स्यानी तो सोचा ब्याह का। पैदा होते ही पिता ने उसके बचा रखा था दहेज के लिए,
न चाहते हुए भी किया ब्याह, पिता के मान की खातिर माँ ने भी समझाया
लड़की का है धर्म यही। रह गई लोक-लाज मर्यादा में बँधकर, मन से है दुखी
बाँट न सकी दुख अपना। इस देहरी से उस तक, इतने में बदल गया संसार गर्भ में आयी जान नन्ही सी
विस्मृत में पड़ गयी वो, सोचा उसने कौन बेहतर लड़का या लड़की ?
माँ ने भी समझाया लड़की की है दुनिया इतनी सी। माँ भी न लांघ सकी देहलीज।
अंत में समझ गयी वह इस बरबर दुनिया की रीति को।

संगति का असर

मुकेश

(बी.एस.सी-तृतीय सेमेस्टर)

एक बार आइंस्टीन अपनी गाड़ी से सफर कर रहे थे, तभी आइंस्टीन के ड्राइवर ने एक बार आइंस्टीन से कहा सर मैंने
हर बैठक में आपके द्वारा दिये गये हर भाषण को याद किया है। आइंस्टीन हैरान हो गये, आइंस्टीन ने कहा अगले
आयोजक मुझे नहीं जानते, आप मेरे स्थान पर वहाँ बोलिये और मैं ड्राइवर बनूँगा ऐसा ही हुआ, बैठक में अगले दिन
ड्राइवर मंच पर चढ़ गया और भाषण देने लगा उपस्थित विद्वानों ने जोर-शोर से तांलियां बजाई, उस समय एक
प्रोफेसर ने ड्राइवर से पूछा, सर क्या आप सापेक्षता की परिभाषा को फिर समझा सकते हैं ?

असली आइंस्टीन ने देखा- अब ये बड़ा खतरा है देखें ड्राइवर क्या करता है इस बार ड्राइवर पकड़ा जायेगा।
लेकिन ड्राइवर का जबाब सुनकर वे हैरान रह गये, ड्राइवर ने जबाब दिया- क्या यह आसान बात आपके दिमाग में
नहीं आई ? मेरे ड्राइवर से पूछिए वह आपको समझाएगा।

कहानी का आशय:- इस कहानी से यह पता चलता है कि यदि आप बुद्धिमान लोगों के साथ चलते हैं तो आप भी
बुद्धिमान बनेंगे और मूर्खों के साथ ही सदा उठेंगे बैठेंगे तो आपका मानसिक तथा बुद्धिमता का स्तर और सोच भी उन्ही
की भाँति हो जायेगी।





बेरोजगारी- समस्या से समाधान तक

अभय कुमार सिंह

(बी.एस.सी-तृतीय सेमेस्टर)

हम अपने देश के उन करोड़ों युवाओं के बारे में बात करेंगे जिनके पास डिग्री तो है पर नौकरी नहीं है। वह परेशान होते होंगे और वह सोचते होंगे कि चारों तरफ बेरोजगारी है। लेकिन हाल ही में किए गए सर्वे इंडिया स्किल रिपोर्ट 2023 जिसमें भारत के 3,75,000 छात्रों का एक टेस्ट लिया गया था। उससे पता चला कि भारत में डिग्री लेने वाले 50% युवा ऐसे हैं जिनमें नौकरी के लिए पर्याप्त स्किल (हुनर) नहीं है। इसका सीधा अर्थ यह है कि 50% युवा वे हैं जिन्होंने अपनी डिग्री बिना पढ़े-लिखे ही प्राप्त की है पर आप सोच रहे होंगे बिना पढ़े-लिखे कैसे कोई डिग्री ले सकता है। आपको नहीं पता आज के समय में पैसों से सब मिल जाता है। तो उसको सीधा मतलब यह है कि इन्हें आता तो कुछ नहीं है पर दिखाने के लिए डिग्री है। इसी सर्वे के अनुसार एम.बी.ए. करने वाले 40%, इंजीनियरिंग के 43%, बी. कॉम. के 40%, आई.टी.आई. के 66%, पॉलिटेक्निक के 72%, बी.फार्मा के 43%, और बी.एस.सी. के 63%, छात्र बेरोजगार हैं। यानी इन तमाम युवाओं के पास दिखाने के लिए शानदार डिग्रियां हैं पर आता कुछ नहीं है। यही वजह है इन युवाओं को नौकरी नहीं मिल पाती। इसमें दोष उन युवाओं का नहीं है, इसमें दोष उन संस्थाओं का है जहाँ से वे युवा अपनी डिग्रियां लेते हैं, पर इसमें ज्यादा दोष उन युवाओं की प्राथमिक शिक्षा का भी पड़ता है। क्योंकि आज का दौर प्रतियोगिता का दौर है, सभी माता-पिता अपने बच्चों पर अच्छे नंबर लाने का दबाव बनाते हैं, पर उन्हें यह सोचना चाहिए कि ये नंबर किसी काम के नहीं, क्योंकि आजकल के ज्यादातर बच्चे रटने पर ज्यादा ध्यान देते हैं जिस कारण उसका क्या मतलब है?, हमारे जीवन में उसका क्या उपयोग है? यह वे बच्चे समझ नहीं पाते। ऐसी शिक्षा का क्या फायदा जिसमें सिर्फ रटो लिखो और अगली कक्षा में चले जाओ, ऐसा करके एक दिन वह पढ़-लिखकर सभी परीक्षाएँ पास कर नौकरी ढूँढने निकलेंगे और हर दिन असफलताओं का सामना करेंगे। इस सबसे बचने का सबसे सही उपाय यह है कि शिक्षकों को चीजों को रटा कर नहीं उन्हें कोई बात किसी दैनिक वस्तु या संसार की क्रियाओं का उदाहरण देकर समझानी चाहिए ताकि बच्चे उसे लंबे समय तक अपने दिमाग में संग्रहित कर सकें और उसे दैनिक जीवन में भी उपयोग कर सकें और हर चीज को समाज से जोड़ सकें, इससे वे पढ़ाई को समाज का ही अंग समझने लगेंगे। इस प्रकार हम अपनी नींव को मजबूत कर सकते हैं क्योंकि अगर नींव मजबूत हो तो उससे हर प्रकार की इमारत बन सकती है। इस पर बहुत से लोग कहते हैं की पढ़-लिखकर तो सिर्फ नौकरी करते हैं हम तो अपना काम करेंगे। पर किसी भी काम को करने के लिए उस काम के बारे में ज्ञान भी तो जरूरी है। तो चाहे आप नौकरी करें या नौकरी दें शिक्षा सभी के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षा और ज्ञान ऐसी चीजें जो हर समय काम आने वाली होती है हमारे ग्रंथों में भी लिखा है-

न चौरहार्यं न च राजहार्यम्, न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।

व्यये ये कृते वर्धति एव नित्यम्, विद्या धनं सर्वधनप्रधानम् ।।

“ न चोर चुरा सकता है और न राजा छिन सकता है ना भाई बांट सकता है ना ही इसका कोई अतिरिक्त भार होता है इसको जितना खर्च करो उतना दिन प्रतिदिन बढ़ती है विद्या धन सभी धनों में सर्वश्रेष्ठ है।

धन्यवाद !



शिक्षक



आशीष यादव

(बी.एससी-तृतीय सेमेस्टर-कम्प्यूटर साइंस)

शिक्षक का दीप जलता चमचम, ज्ञान का अलख जगाता है,
 अंधकार अज्ञान का मिटता तन से, मन में उम्मीद लाता है।
 खाली पट्टे को शब्दों से रंगता, जिज्ञासा को जगाता है,
 नन्हें कदमों को राह दिखाता, सितारों तक पहुँचाता है।
 अक्षरों के झरोखे खोलता, संसार का दर्शन कराता है,
 इतिहास के पन्ने पलटता, भविष्य का गीत सुनाता है।
 संख्याओं का खेल रचाता, तर्क का दीप जलाता है,
 विज्ञान का जादू दिखाता, सूरज चाँद को छूने पाता है।
 कलाओं का रंग बिखेरता, सौंदर्य को समझाता है,
 सहृदयता का पाठ सिखाता, जीवन को सुन्दर बनाता है।
 शिक्षक ही माली कोमल मन का, बीज ज्ञान का बोता है,
 प्रेम से सींचता, लाड से पालता, सपनों को उगाता है।
 नमन गुरुवर को कोटि-कोटि, शिक्षा के प्रकाश स्तम्भ को,
 जो अज्ञान के अंधकार से निकाल, जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है।
 शिक्षा ही असली सम्पत्ति, धन-दौलत सब माया है,
 यह ज्ञान का खजाना खोलती, जीवन को सार्थक बनाती है।
 तो आओ मिलकर ज्योति फैलाएँ, शिक्षा का दीप जलाएँ,
 हर बच्चे को ज्ञान दें, हर घर को रोशन बनाएँ।



माँ, तू है तो हम हैं...

आयूष मैरोठिया

(बी.कॉम-पंचम सेमेस्टर)

कितना भी लिखू तेरे लिए कम है, सच तो ये है माँ, तू है तो हम हैं।
 तेरे आंचल में सुकून है माँ, तो तेरे पैरों में जन्त का सुख है।।
 तेरी डांट से मिलती खुशी माँ, तुझे उदास देखकर होती मेरी आँखें नम हैं।
 तेरे होने से रहती है घर में रौनक तो, तेरी मुस्कुराहट देखके सांस चलती है।।
 भगवान मेरी उम्र भी तुझे दे दे, क्योंकि तुझसे ही जुड़ा मेरा वजूद है।।
 कितना भी लिखू तेरे लिए कम है, सच तो ये है माँ, तू है तो हम हैं।



पिता पर खूबसूरत कविता



आशीष झा

(बी.एस.सी.-द्वितीय सेमेस्टर-गणित)

पिता एक उम्मीद है, एक आस है, परिवार की हिम्मत और विश्वास है।

बाहर से सूरज अंदर से नर्म है, उसके दिल में दफन कई मर्म है।

पिता संघर्ष की आंधियों में हौंसलों की दीवार है।

परेशानियों से लड़ने की दोधारी तलवार है।

बचपन में खुश करने वाला खिलौना है, नींद लगी तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।

पिता जिम्मेवारियों से लदी गाड़ी का सारथी है,

सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी है।

सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है, इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है।

पिता जमीर है पिता जागीर है, जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है।

कहने को सब ऊपर वाला देता है, पर खुदा का ही एक रूप पिता का शरीर है।

जीवन जीना है तो ऐसे जियो

संदली शर्मा

(बी.एस.सी.-तृतीय सेमेस्टर-गणित)

जुगनू के जलने से डरोगे तो सूरज से आँख कैसे मिलाओगे ?

सूरज सा जलना होगा अग्नि सा तपना होगा

कीट पतंगों सा नहीं बाज जैसा बाजीगर बनना होगा।

रूठे मुकद्दर से रण करना होगा पथ पर दृढ़ता से चलना होगा।

यदि केशव साथ ना हो, फिर भी पार्थ को रणभूमि मे आना होगा

कर दो ऐलान-ए-जंग बजा दो विजय का बिगुल।

दुंदुभी-सी कानों में गुँजेगी कह दो कतरे-कतरे से पराजय न स्वीकार हमें

यदि बह जाये रक्त-रूधिर, बोटी-बोटी कट जाये,

निज हाथों में हंसते-हंसते नीत की मशाल जलानी होगी।

सपोलों के डर से दुबक कर बैठोगे तो गिरगिट को ना पहचान पाओगे।

अम्बर पर लिखोगे नाम अपना ता जहां भर में विख्यात हो ही जाओगे।

बांधोगे सागर को तो लंका को चढ़ जाओगे, व्यर्थ विलाप करने से न कुछ पाओगे।

मिथ्या को गले लगाओगे तो अंतरमन में चैन न पाओगे।

पतझड़ बनोगे तो झड़ना ही होगा, मन लुभाने वाले सावन बनोगे तो प्रफुल्लित रहोगे।

सचेत चिंतन ना करोगे तो दो मुद्दों को पहचान ना पाओगे।

काँटों की राह पर चलने की प्रबुध बनोगे तो सफलता को चूम ही लोगे।

राम से बनोगे तो पूजे ही जाओगे, बनोगे दशानन तो दशहरे में जलाए ही जाओगे।



BINARY THINKING : THE D-HUMANISER

Saurav Pachaury

M.Sc. Final Year Mathematics

When we think about something, we make some decisions that are the results of our pre-conceived thoughts about that particular thing. Our brain is trained in such a way that it catches too good or too bad side. while there might be multiple options available just like there are many shades of gray between black and white. Thinking in absolute terms leads us to binary or polarised thinking. Give yourself a topic and test yourself whether you see many grey sides or not. you might have watched two recently released movies titled 'Animal' and '12th Fail'. If you try to recall, 'Animal' seems full of toxicity and violence while '12th fail' tries to deliver of success after extreme struggle at the end. If you thin the same, you have binary thought process that are about good and bad only. Let me tell you grey side of it, 'Animal being the bad one

has a good message that enables you to understand, if you as parents as guardian have not raised your offsprings with balanced child Rearing Practice, it shall be reflected in the character of them sooner or later while 12th fail being the messenger of goodness gives 'FALSE HOPE' to over entusiast individuals who get influenced by the happy ending of the story. But in real life, there is not always a happy ending.

We can take another example, there are two countries not having balanced relations. Citizens of those countries end up having thoughts that their country is always in good books and other one in bad, by following pre-conceived thoughts, while there can not be an absolute good or bad country, there is some good in bad and bad in good. Just like is hero or good side of bad and bad side of good.

The problem with binary thinking is that it simplifies the complexcity life is not that simple, the Zero-one thinking makes.

Polarised thinking takes the empathy out of you and slowly de-humanises you. Here is the way out to avoid binary thinking, first of all understand the dictionary like Lord Rama thought standing at Rameshwaram that waging a war against whole humanity because Ravana took Seeta away from him is not a solution. Analysis of 'Dvanda' makes you human. Understand the uncertainly and complexity of the issue because complex problem always do not have simple solutions. So Revisit your thou ghts



मेहनत

अलशिफा

(पंचम सेमेस्टर)

मंजिल से आगे बढ़कर मंजिल तलाश कर,
मिल जाए तुझको दरिया तो समन्दर तलाश कर ।
हर शीशा टूट जाता है पत्थर की चोट से,
पत्थर ही टूट जाए वो शीशी तलाश कर ।
झूठी मेहनत से तेरो, क्या सदियाँ गुजर गई,
दुनिया तेरी बदल जाए वो मेहनत तलाश कर ।





कभी खुदसे भी थोड़ी बात करो

श्रुष्ठी गुप्ता

बी.एससी.(पी.सी.एम.), प्रथम सेमेस्टर

कभी खुदसे भी थोड़ी बात करो.....

किसी शाम बैठकर खुदसे मुलाकात करो....

क्या है जो तुम्हे खुश कर जाता है

कौनसी तस्वीर में बचपन नजर आता है

वो छोटी-छोटी ख्वाहिशें जो पूरी करना चाहते थे

सोने से पहले ख्वाबों का महल बनाते थे

पूछो जरा खुदसे ऐ दिल तू क्या चाहता है

कौनसी जिन्दगी है, जो तू जीना चाहता है

मुस्कुराओगे बहुत जब खुदसे मिलोगे

खुदको समझाओगे, ख्वाहिशों को जानोगे

वो क्या है जो तुम्हें भाता है

वो क्या है जो तुम्हे खुशी दे जाता है

सब समझोगे, सब नजर आएगा

किसी शाम खुदसे मिलो बड़ा आनंद आएगा

जीवन से लड़ाई

हिमांशी कुशवाह

एम.एससी केमिस्ट्री-प्रथम सेमेस्टर



में रात चन्द्रमा से अपनी, कुछ बात अनोखी कर बैठी।

में जीवन की एक राही हूँ, इस जीवन से क्यूँ डर बैठी।

एक रात अन्धेरी आयी थी, हर तरफ है आग लगायी थी।

अपनों की दुनिया में भी आज, क्यूँ मुझको सब अंजान लगे।

छाया था अन्धेरा जीवन में, जीवन से हुई लड़ाई थी।

वहाँ बात अनोखी बाकी है, यहाँ रात अभी भी काफी है।

जब हार गयी इस जीवन से, तो सोच लिया एक कोशिश कर

फिर गिरकर संभली कोशिश में, जब खुदको मैंने पहचाना

तो हारी बाजी में जीत गई, में जीवन की एक राही हूँ।

इस जीवन से मैं लड़ बैठी, मैं रात चन्द्रमा से अपनी

कुछ बात अनोखी कर बैठी।



शहीद जवानों के लिए कुछ वाक्य-

आशी उपाध्याय

“ अब तो हमारा तिरंगा झण्डा भी, हमसे यह पूछने लगा है, कि क्या बात है भारत ?
आजकल फहराने से ज्यादा, मैं कफन दफनाने के क्यूँ काम आ रहा हूँ।

महोदय,.....

हृदय तो उस दिन फट गया, जब बूढ़ी माँ अपने पोते के चीथड़ों को देखकर बोली कि
साहब आप तो भर्ती में एक इंच भी कम नहीं लेते मैं आधा शरीर कैसे ले लूँ ?

महोदय,.....

आज इन मानवाधिकारों के कारण इन आतंकियों के बंगलों के यहाँ तो आकाओं की नाफनी हस्ती है,
और शहीद हुए हमारे जवानों के आँगन की तुलसी रोती है। जब एक शहीद हुए जवान की विधवा की वेदना
चीख-चीखकर ये कहती है कि, प्यार भी भरपूर गया, मांग का सिंदूर गया, नन्हे नौनिहालों की लंगोटियां चली
गई, छोटी-छोटी बेटियों की चोटियां चली गई और आपके लिए तो एक आदमी मरा है साहब, मेरे घर की तो
रोटियां ही चली गई।



बेटियां

अंजली

कौन कहता है कि बेटियां कुछ कर नहीं सकती।

उन्हें कुछ कर दिखाने का मौका तो दो।

इन्हें मत तोड़ो यही हमारे देश की शान हैं।

इनसे ही तो हमारा घर-परिवार है।

यही तो खुबसूरती की पहचान है।

कौन कहता है कि बेटियां कुछ कर नहीं सकती।

दुनिया में रोशनी चिरागों से होती है।

लेकिन घर का चिराग तो बेटियां ही होती है।

सुख में तो सब साथ देते हैं, लेकिन दुःख में साथ तो बेटियां ही देती है।

हर घर का सम्मान होती हैं बेटियां

माता पिता का अभिमान होती हैं बेटियां

बेटियों से ही आबाद हैं दुनिया

बेटी न होती तो थम जाती ये दुनिया।

कौन कहता है कि बेटियां कुछ कर नहीं सकती।



खुशी मिलती है इन खबरों को सुनकर, अभी कुछ हैं जो बेटियाँ चाहते हैं।

हमारा वश नहीं है बेटों पर लेकिन, बहू सब चाँद जैसी चाहते हैं।।



सन्तुष्टता ही जीवन



खुशी शर्मा

एम.एस.सी.-प्रथम सेमेस्टर

एक राजा का जन्मदिन था। सुबह जब वह घूमने निकला तो उसने तय किया कि वह रास्ते में मिलने वाले पहले व्यक्ति को आज पूरी तरह से खुश व सन्तुष्ट करेगा। रास्ते में उसे एक भिखारी मिला भिखारी ने राजा से भीख माँगी तो राजा ने भिखारी की तरफ एक तांबे का सिक्का उछाल दिया, सिक्का भिखारी के हाथ से छूट कर नाली में जा गिरा। भिखारी नाली में हाथ डालकर सिक्का ढूँढने लगा। राजा ने उसे बुलाकर दूसरा तांबे का सिक्का दे दिया। भिखारी ने खुश होकर वह सिक्का अपनी जेब में रख लिया और वापस जाकर फिर से नाली में सिक्का ढूँढने लगा। राजा को लगा यह बहुत गरीब है, उसने भिखारी को बुलाया और चाँदी का एक सिक्का दिया। उस भिखारी ने वह रख लिया और वह फिर से नाली में गिरे सिक्के को ढूँढने लगा। राजा ने फिर उसे बुलाया और उसे सोने का सिक्का दिया। भिखारी खुशी से झूम उठा और वापिस आकर अपना हाथ नाली की तरफ बढ़ाने लगा। राजा को बहुत बुरा लगा। राजा ने भिखारी को फिर से बुलाया और कहा मैं तुम्हें अपना आधा राजपाठ देता हूँ। अब तो खुश हो जाओ।

भिखारी बोला, सरकार मैं तो खुश और संतुष्ट तभी हो सकूँगा जब नाली में गिरा हुआ सिक्का भी मुझे मिल जायेगा। हमारा हाल भी उस भिखारी के जैसा ही है हमें ईश्वर ने मानव रूपी अनमोल खजाना दिया है और हम उसे भूलकर संसार रूपी नाली में तांबे के सिक्के निकालने के लिए जीवन गंवाते जा रहे हैं। यदि हम इस अनमोल जीवन का सही इस्तेमाल करें तो हमारा जीवन धन्य हो जायेगा।



हम हिन्दी बोलने से शर्माते हैं

गुलशन कुमार

बी.एससी.(पी.सी.एम.), प्रथम सेमेस्टर

अंग्रेजी में नंबर थोड़े कम आते हैं, अंग्रेजी बोलने से भी घबराते हैं पर स्टाइल के लिए पूरी जान लगाते हैं, क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते हैं एक वक्त था जब हमारे देश में हिन्दी का बोलवाला था, माँ की आवाज में भी सुबह का उजाला था।

उस माँ को अब हम मोम बुलाते हैं, क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते हैं देश आगे बढ़ गया पर हिन्दी पीछे रह गई, इस भाषा से अब हम नजर चुराते हैं क्योंकि हम हिन्दी बोलने से शर्माते हैं, माना अंग्रेजी पूरी दुनिया को चलाती है पर हिन्दी भी तो हमारी पहचान दुनिया में कराती है।



आत्म-अनुशासन



अमन वर्मा

(बी.एससी-तृतीय सेमेस्टर)

इंसान का वो व्यवहार जिसमें वह खुद से किए गए वचन को कभी टूटने न दे। जहाँ लोग अपने छोटे-छोटे वचन को नहीं निभा पाते, वही कोई खुद से किए वचन का सम्मान कर आत्म-अनुशासन का परिचय दे जाता है। अपने दिमाग में आने वाले इन विचार को नियंत्रित करें जो तुम्हें नियंत्रित करते हैं। उसको ऐसा बना लो कि मन ना हो तब भी काम को पूरा करें। तब कही जाकर तुम समझ सकोगे आत्म-अनुशासन की शक्ति। तुम किसी विषय में इतने कमजोर हो कि उसकी वास्तविकता जानने के लिए बार-बार गूगल करते हैं। फिर भी अपने हुनर को निखारने के लिए जो इन कठिन परीक्षाओं से खुद को गुजारता है वो होता है आत्म-अनुशासन जो तुम आज गेम्स, सोशल मीडिया और अन्य गतिविधि में बुरी तरह फंसे होते हो। तब तुम्हें समझ आता है कि अब वो पढ़ाई क्यों नहीं हो पाती है जो पहले होती थी, तब तुम अपने आपसे वादा करते हो इन गेम्स को हटाकर सोशल मीडिया को मिटा कर जब तुम अपने आप को पूर्ण रूप से खुदमें झोंक देते हो तो वो होता आत्म-अनुशासन। वो सच्चा इशक जो तुम्हें तुम्हारी जंग में बार-बार कमजोर कर देता है। उस कठिन समय में उससे कहो कि मैं तुम्हारे साथ इस जंग में कमजोर हो जाता हूँ, ये मेरी गलती है दिल पर पत्थर रख कर उस घाट की कुर्बानी अपने लक्ष्य के लिए दे दो। कुर्बानिया देना ही आत्म-अनुशासन का असली मतलब है।

अगर जिंदगी में कुछ बड़ा पाना है तो कुछ तो त्याग करना पड़ेगा। अपने वचन का सम्मान करोगे तो ही तुम्हें वैसी सफलता मिलेगी जैसी तुम चाहते हो। देखो मेहनत करने से ही सब कुछ मिलता है। इसलिए अपनी मेहनत की क्षमता बढ़ाओ। जिससे तुम्हारा आलस कोसों दूर भाग जाए। कहीं अकेले में जाकर सोचो कि वो कौनसी गतिविधि है जो तुम्हें आलसी बनाती है, जो हमें मेहनत करने से रोकती है और ऐसे विकारों को दूर भगाओ इंसान के अन्दर ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं जिसे 'आत्म-अनुशासन' से खत्म ना किया जा सके।

तो अभी इसी वक्त उठो और खुद से ये वादा करो फिर वो पढ़ाई से हो या फिर चाहे किसी अन्य काम से उसे पूरी शक्ति और श्रद्धा से खत्म करोगे चाहे मन हो या न हो। वो काम पूरा होना चाहिए और तुम किसी से जुड़े हो उसका नाम रोशन होना चाहिए।





राघवेन्द्र चरित व प्रकृति का

श्रद्धा उपाध्याय

एम.एस.सी द्वितीय वर्ष

वस्तुतः में विज्ञान विषय की छात्रा हूँ। मुझे संस्कृत विषय में पठन-पाठन का सौभाग्य प्राप्त नहीं है तथापि मेरे पिताजी ने संस्कृत विषयान्तर्गत राघवेन्दु चरित का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर शोध प्रबन्ध पूर्ण किया है। उनका शोध की गहन साधना के कुछ विषय मेरे मरुस्थल हृदय में अंकुरित हुए जिससे मुझे उनके शोध प्रबन्ध के अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त हो सका। राघवेन्द्र चरितम एक महाकाव्य है जो संस्कृत भाषा में 2400 श्लोकान्तर्गत आधुनिक कालीन महाकवि पं० राजकिशोर मणि त्रिपाठी की अप्रतिम रचना है। वैसे तो इस महाकाव्य का प्रतिशब्द लोक कल्याणकारी है तथापि मैंने इस महाकाव्य में प्रकृति को वैशिष्ट्य के साथ दर्शन किये हैं।

प्रकृति और मानव का अनन्य सम्बन्ध है, क्योंकि प्रकृति हमारी जननी है संपोषिका है तथा हमारी कुशलता की संस्थापिका है। वस्तुतः प्रकृति सम्पूर्ण प्राणि जगत की जननी है। प्रकृति की व्यापक सत्ता मानव के लिये आशीर्वाद है। तथापि अयोध्या से निर्वासित राजकुमार राघवेन्द्र-लक्ष्मण जो कि समस्त भौतिक सुखों से सम्पन्न थे, अब पंचवटी में न कोई राज्य न कोई राजधानी न सभी सभ्य राजा न सेना न मिथ्या अभिवादन सब साधनों से विहीन होने पर भी प्रकृति की मातृत्व छत्र-छाया में उन्हें सर्वसुख सुलभ है। प्रकृति का भाव मय मार्मिक चित्रण जितना राघवेन्द्र चरितम् में मिलता है उतना अन्य काव्यों में मिलना असम्भव है। अचेतन में चैतन्यता का संचार अनुपम है। नदियों का सद्गम दो बहिनों के परस्पर स्नेहिल मिलन जैसा दिखता है-

शिश्लेष विस्मृत्य स्वदेहभावं समंश केनार्धमुपैतिपूर्णताम् ।

मिथिला नगरी में भगवान राम के प्रवेश के समय मिथिला नगरी की चिन्ता का भावपूर्ण चित्रण तथा भावमय सोत्प्रेक्ष चिन्तायें दृष्टव्य हैं-

अपूर्व चौरै मिथिलामुपागते हठान्मुनीनायच मंनासि मुण्वाति ।

न जातु रत्ननम चोरदेदसौ भियाङ्गनया समिथिला व्यकमान्त ।।

मानी प्रेमीजनों की संयुक्तिका के रूप में प्रकृति का सुन्दर वर्णन है-

भगवान राघवेन्द्र पावस ऋतु का वर्णन करते हुये सीता से कहते हैं कि लगता है प्रिया से प्रियतम को जोड़ने के लिये यह प्रसन्न समय आया है।

यद्यपि मानव प्रकृति से भिन्न नहीं है, बल्कि कह सकते हैं कि विधाता की सर्वोत्कृष्ट कृति मनुष्य है जिसे अपरमिति बुद्धि से युक्त कर उचित तथा अनुचित की तार्किक शक्ति प्रदान कर सम्पूर्ण सृष्टि को संरक्षित करने के दायित्व निर्वहन हेतु नियुक्त किया है। महाकाव्य में इसी संकल्पना के पूर्ति के क्रम में भावी अयोध्यापति भगवान राम के प्रकृति के प्रति परम श्रद्धा भावों को मुखरित कर आधुनिक कालीन सरकारों को यह संदेश प्रस्तुत किया है कि प्रकृति के संरक्षणार्थ भगवान राम की प्रति भाँति प्रकृति के प्रति श्रद्धानत होना ही होगा ' क्योंकि ' महाजनाः येनगताः पन्थाः अर्थात् श्रेष्ठ लोग ही समाज के पथ प्रदर्शक होते हैं।

आधुनिक कालीन भोगलिप्सा से संयुक्त मानव जीवन शैली इतनी विकृत हो गयी है कि हम लोग प्रकृति का अधांधुन्ध दोहन कर रहे हैं। यथा- भूमिगत जल को विद्युत चालित पम्पों से निकाल कर वृथा नालियों में बहा रहे हैं। जिससे भूमिगत जलस्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। जिसका दुःपरिणाम यह होगा कि जल शून्य धरा पर पशु-पक्षी, वृक्ष, मानव आदि सभी प्राणियों का पृथ्वी पर जीवित रह पाना कठिन हो जायेगा।

अतः यह आधुनिक सरकारों का परम पावन कर्तव्य है कि भावी त्रासदी की आहट से सावधान होकर प्रकृति के संरक्षण के लिये प्रेरित करें।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्रणि पश्यन्तु मा कश्चिन् दुःख भाग भवेत् ।।

इस प्रकार के कल्याणप्रद भाव जन-जन में संचारित करें तभी हम सच्चे अर्थों में अपने ऋषि-मुनियों तथा पूर्वजों के प्रकृति के प्रति श्रद्धायुक्त जीवन का मूल्य चुकाकर अपनी भावी पीढ़ियों के जीवन को सुरक्षित करने का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।



The Power Of One

Princy Parashar
(B.Sc., Math- 1st Semester)

One song can spark a moment,
One tree can start a forest,
One smile Brings a freindship
One star can guide a ship at sea
One note can change a nation
One candle wipes out darkness
One step must start each prayer
One touch can show your care
One heart can know what's true
You see, it's up to you !!

One flower can make the dream
One bird can herald spring
One handclasp lifts a soul
One word can frame the goal
One sunbeam lights a room
One laugh will conquer gloom
One hope will raise our spirits
One voice can speak with wisdom
One life can make the diffrence
Everything is possible If you are ready...

My Aim in Life

Km. Alisha
(M.Sc., Final - Mathematics)

Life without aim is useless, aimless and pointless. Life is a great blessing of God. It should be spent on a purpose, with certain aim. Otherwise, there will be no diffrence between the life of man and that of animals.

Life in olden time was simple. Man had to hunt for food, nothing more. But, now is a diffrent time. We have new challenges to meet. We have new problems to solve. So, one should be ready for all these things. One can face life and its problems with a plan. Without a plan, life would be difficult to lead.

"Teachers make the world a better place"

I want to become a teacher. The question is why so. There are many other processions. One can be a doctor, earning a lot of rupees daily. One can be an engineer, getting thousand of rupees as salary. One can also be a trader, selling things and earning lots of profits. Why then a teacher? I want become a teacher because I love this profession. Not only that I love it, but also for its greatness. I know that people don't think this profession as a great one. They think that teachers are merely teachers, with no high status in life.

My parents and teachers always tell me the importance of teaching. It is a noble profession. I want to make the students a good human being and a good citizen. I want to become a guide, philospher will explain to them clearly every chapter so that they can learn it easily. I want to mature the tender minds of the pupils. I can help in widening their outlook on life. I know this profession will help me to achieve peace and contentment in my life. I am studying hard to fulfill my dreams.

Parents give us birth, while teachers make the way to their life.....



आख्या- महिला उत्पीड़न समिति

इस समिति द्वारा महाविद्यालय में एक पिंक पेटी लगवाई गई जिसमें छात्राएँ अपनी समस्याएँ ड्रॉप कर सकें। इस पेटी को समय-समय पर खोलकर उसमें आई समस्याओं का समाधान किया जाता है।



डॉ. रश्मि जिन्दल

प्रभारी-महिला उत्पीड़न समिति

आख्या- पुस्तकालय व वाचनालय समिति

महाविद्यालय में वर्ष 2023-24 में छात्र-छात्राओं के अध्ययन हेतु पुस्तकों की उपलब्धता की गयी तथा अगले सेमिस्टर के लिए पुस्तकों को माँगने की कार्यवाही प्रगति पर है तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु पेपर व मैगजीन भी पुस्तकालय में उपलब्ध है।

प्रोफेसर- जी.सी. यादव

(प्रभारी पुस्तकालय व वाचनालय समिति)

आख्या- निर्धन छात्र सहायता समिति सत्र 2023-24

महाविद्यालय में निर्धन छात्र कल्याण समिति द्वारा निर्धन छात्र-छात्राओं के चिन्हित किया गया जिससे 33 छात्र-छात्राओं को प्रबन्ध समिति के द्वारा चैक वितरित किये गये।

प्रोफेसर- जी.सी. यादव

(प्रभारी निर्धन छात्र सहायता समिति)

आख्या- छात्रवृत्ति समिति

महाविद्यालय में वर्ष 2023-24 में छात्र-छात्राओं के छात्रवृत्ति फार्म भरवाकर महाविद्यालय द्वारा फॉरवर्ड कर दिये गये हैं। जिससे छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति का लाभ मिलना शुरू हो चुका है।

प्रोफेसर- जी.सी. यादव

(प्रभारी छात्रवृत्ति समिति)

आख्या- IQAC

महाविद्यालय में वर्ष 2023-24 में IQAC समिति द्वारा चार प्राध्यापकों को जिनमें दो को प्रोफेसर ग्रेड व पदनाम व दो को सीनियर ग्रेड देने की संस्तुति की गयी व उनका प्रोफेसर ग्रेड व सीनियर ग्रेड लग चुका है।

प्रोफेसर- जी.सी. यादव

(कोऑर्डिनेटर- IQAC)





अनुशासन एवं रैगिंग विरोधी समिति

डॉ. अरुण कुमार यादव

कॉलेज अनुशासन अधिकारी (चीफ प्रॉक्टर)

कॉलेज अपने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तैयार करने के लिए अनुशासन को उसकी सच्ची भावना से अपनाता है। सी.एल.जैन कॉलेज में रैगिंग सख्त वर्जित है। कोई भी छात्र प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, सक्रिय या निष्क्रिय रूप से किसी भी प्रकार की रैगिंग में लिप्त पाया जाता है या परिसर के भीतर या बाहर रैगिंग को बढ़ावा देने की साजिश का हिस्सा बनता है, तो उसे कॉलेज द्वारा सख्त अनुशासनात्मक कार्यवाही का सामना करना पड़ेगा। सी.एल.जैन कॉलेज एक शैक्षणिक संस्थान है और प्रतिबद्ध है।

रैगिंग क्या है ?

रैगिंग के अंतर्गत:

कोलाहलपूर्ण अनुचित व्यवहार करना, चिढ़ाना, भेदे या अशिष्ट आचरण करना, उपद्रवी एवं अनुशासनहीन क्रिया-कलापों में संलग्न होना जिससे अन्य छात्र को गुस्सा, अनावश्यक परेशानी, शारीरिक अथवा मानसिक क्षति हो अथवा उसमें आशंका या भय बढ़ाने वाला हो अथवा छात्रों से ऐसा कार्य करने के लिए कहना जो छात्र-छात्रा सामान्यता नहीं कर सकता/सकती और जिससे उसे शर्म या अपमान का अनुभव होता हो अथवा उसके जीवन के लिए खतरा हो।

रैगिंग की परिभाषा इस प्रकार है:- किसी छात्र को मजाक में या अन्य किसी प्रकार से ऐसा कार्य करने के लिए कहना, प्रेरित करना या बाध्य करना, जो मानव - मर्यादा के खिलाफ हो या जो उसके व्यक्तित्व के विपरीत हो या जिससे वह हास्यास्पद हो जाए, या डरा-धमकाकर, गलत ढंग से रोक कर, गलत ढंग से बंद करके या उसे चोट पहुँचा कर या उस पर अनुचित दबाव डालकर या उसे इस प्रकार की धमकी, खलल अवरोध, गलत ढंग से बंदी बनाने, चोट या अनुचित दबाव का भय दिखाकर।

वैधानिक रैगिंग का स्वरूप:-

रैगिंग निम्नांकित रूपों (सूची केवल निर्देशात्मक है-संपूर्ण नहीं) में पायी जाती है:

- * सीनियर छात्रों को सर कहने के लिए, सामूहिक कवायद करने के लिए।
- * सीनियर छात्रों के लिए, क्लास - नोट्स उतारने के लिए, अनेक सौंपे हुए कार्य करने के लिए, सीनियर छात्रों के लिए भृत्योचित कार्य करने के लिए
- * अश्लील प्रश्न पूछने या उनका उत्तर देने के लिए, नये छात्रों को अपने सीधेपन के विपरीत आघात पहुँचाने हेतु।
- * अश्लील चित्रों को देखने के लिए, शराब उबलती हुई चाय आदि कि लिए बाध्य करना, कामुक संकेतार्थ वाले कार्य-समलैंगिक कार्य सहित करने के लिए बाध्य करना।
- * ऐसे कार्य करने के लिए बाध्य करना जिससे शारीरिक क्षति, मानसिक पीड़ा या मृत्यु तक हो सकती है।
- * नंगा करना, चुंबन लेना आदि। अन्य अश्लीलताएँ करना।
- * उपर्युक्त से यह विदित होता है कि प्रथम पांच को छोड़कर अधिकतर रैगिंग के विकृत रूपों से युक्त हैं।

रैगिंग में लिप्त होने पर दिये जाने वाले दण्ड।

- * प्रवेश निरस्त किया जाना।



- * कक्षा/छात्रावास से निष्कासित किया जाना।
- * राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा युवा उत्सव में भाग लेने पर - प्रतिबंध।
- * परीक्षा परिणाम रोकना।
- * छात्रवृत्ति अथवा अन्य सुविधा रोकना।
- * संस्था से रस्टीगेट किया जाना।
- * परीक्षाओं से वंचित करना।
- * आर्थिक दण्ड रूपये 25000/- तक।

अनुशासन एवं रैगिंग विरोधी समिति

आर्थिक अनुशासन वह आधार है जिस पर एक शैक्षणिक संस्थान कार्य करता है। अनुशासन समिति का निर्माण कुशल शैक्षणिक व्यवसाय के लिए अनुकूल परिसर सुनिश्चित करने के कार्य के साथ किया गया है। अनुशासन समिति को परिसर में सौहार्दपूर्ण, संघर्ष-मुक्त माहौल बनाए रखने की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जो किसी भी शैक्षणिक संस्थान के सुचारू कामकाज के लिए मुख्य शर्त है। छात्रों की ओर से किए गए किसी भी कृत्य या चूक से शांतिपूर्ण परिसर के माहौल को खतरा होता है, इसकी उचित जांच की जाएगी और अंतिम निर्णय के लिए कॉलेज प्रशासन को उचित अनुशासनात्मक कार्यवाही की भी सिफारिश की जाएगी। समिति यह सुनिश्चित करती है कि छात्र कॉलेज द्वारा निर्धारित आचार संहिता का पालन करें। शारीरिक हिंसा और ऐसे अन्य विघटनकारी व्यवहार सहित उपरोक्त दिशा-निर्देशों के सभी उल्लंघनों की समिति द्वारा तेजी से जांच की जायेगी और अपराधियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाएगी। वर्तमान में समिति का गठन विभिन्न विभागों के सदस्यों द्वारा किया जाता है। सदस्य हैं:

1. डॉ. सर्वेश चंद्र यादव- भौतिक विभाग
2. डॉ. श्रीमती रश्मि जिंदल- रसायन विभाग
3. श्री हवा सिंह- भौतिक विभाग
4. श्रीमती पूजा त्यागी- भौतिक विभाग
5. डॉ. हेमलता- रसायन विभाग
6. श्री दीपक कुमार- रसायन विभाग
7. शिवानी गोयल- गणित विभाग
8. डॉ. प्रदीप जैन- रसायन विभाग
9. डॉ. कुबेर सिंह- जन्तु विज्ञान विभाग

अनुशासन नियम:-

1. प्रत्येक छात्र का यह परम कर्तव्य होगा कि वह कॉलेज के नियमों और विनियमों का पालन करे और सभी स्थानों और सभी परिस्थितियों में अनुशासन और शालीनता के साथ आचरण करे।
2. प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित एवं समय पर कक्षा में उपस्थित होना चाहिए।
3. छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि परिसर में साफ यूनिफार्म पहने और अपना पहचान पत्र अनिवार्य रूप से साथ में लाएँ।
4. मोबाइल फोन का प्रयोग पूर्णतः प्रतिबंधित है।
5. रैगिंग एक दण्डनीय अपराध है और छात्रों से एक-दूसरे के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है।
6. कॉलेज परिसर के भीतर धूम्रपान करना या अन्य निंदनीय आदतों में शामिल होना भी वर्जित है।
7. कक्षाओं के अंदर और बाहर दोनों जगह कर्मचारियों को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए।



8. छात्रों को कॉलेज की संपत्ति और वस्तुओं को कोई क्षति नहीं पहुंचानी चाहिए।
 9. जिन विद्यार्थियों की एक अवधि के दौरान कक्षाएँ नहीं होती हैं, उन्हें कॉलेज के बरामदे या परिसर में नहीं घूमना चाहिए।
 10. जब किसी छात्र को कॉलेज अनुशासन से संबंधित किसी भी मामले पर कोई संदेह हो, तो वह प्राचार्य या किसी भी विभागाध्यक्ष से मार्गदर्शन ले सकता है।
- उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत नहीं आने वाले किसी भी मामले का निर्णय प्राचार्य द्वारा समय-समय पर किया जायेगा।

“भारतीय संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ” वार्षिक रिपोर्ट

भारत समृद्ध संस्कृति और विरासत का देश है। जहाँ लोगों में मानवता सहिष्णुता, एकता, धर्म निरपेक्षता, मजबूत सामाजिक बन्धन और अन्य गुण हैं। भारतीय हमेशा अपने सौम्य और सौम्य व्यवहार के लिये प्रसिद्ध होते हैं। भारतीय लोग हमेशा अपने सिद्धांतों और आदर्शों में बदलाव के बिना उनकी देखभाल और शांत स्वभाव के लिए प्रशंसा करते हैं।

भारत महान किवंदतियों का देश है। जहाँ महान लोगों ने जन्म लिया और बहुत सारे सामाजिक कार्य किए। वे अभी भी हमारे लिए प्रेरक व्यक्ति हैं। इन्हीं भावनाओं को ध्यान में रखते हुए शासन द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक एवं निबंध, भाषण व ड्राइंग एवं पेन्टिंग प्रतियोगिताओं का महाविद्यालयी स्तर पर समिति द्वारा आयोजन किया जाता है।

महाविद्यालय में गणित व रसायन शोध परिषद द्वारा एक दिवसीय सेमीनार आयोजित किया गया। समिति गठन के फलस्वरूप महाविद्यालय में 15 अगस्त 2023, 2 अक्टूबर 2023 (गाँधी जयंती) 13 जनवरी 2023 सेठ छदामी लाल जैन जी की पुण्यतिथि मनायी गयी। समिति के सदस्यों द्वारा 75 वाँ गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी) मनाया गया। जिसमें सभी छात्रों को मेडल, मोमेन्टो, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। भविष्य में महाविद्यालय में वार्षिक उत्सव मनाया जायेगा सत्र 2023-24 हेतु श्रीमती पूजा त्यागी, श्री दीपक कुमार, शिवान गोयल समिति में सक्रिय सदस्य है। तथा समिति सम्बन्धित कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

डॉ. हेमलता यादव

प्रभारी- भारतीय संस्कृति एवं कला प्रकोष्ठ

वार्षिक रिपोर्ट AISHE समिति (सत्र 2023-24)

भारत सरकार द्वारा शिक्षा मंत्रालय के तत्वाधान में उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत आयोजित ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) के क्रियान्वयन को एक दशक से अधिक संपन्न हो चुका है। सर्वे का उद्देश्य उच्च शिक्षा से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त कर प्रत्येक वर्ग एवं व्यक्ति हेतु उच्च शिक्षा को सुगम बनाने वाली नीतियों के निर्माण में सहायता प्रदान करना है।

महाविद्यालय प्रारम्भ से सर्वे में प्रतिभाग करता आया है। वर्तमान सत्र में भी महाविद्यालय द्वारा AISHE (2022-23) सर्वे में भाग लिया गया तथा अपना संपूर्ण सम्बन्धित डाटा निर्धारित प्रारूप एवं मानकों के आधार पर AISHE पोर्टल पर अपलोड किया गया।

गत सूचनाओं के सापेक्ष महाविद्यालय ने AISHE पंजीकरण, छात्रवृत्ति डाटा, परीक्षा परिणाम जैसे प्रमुख बिन्दुओं सम्बन्धित डाटा को भी सर्वे में सम्मिलित किया जो विगत वर्षों में सर्वे में अछूते रहे। सूचना-संग्रहण में महाविद्यालय के समस्त शिक्षकगण एवं शिक्षकणेत्तर कर्मचारियों ने सराहनीय सहयोग प्रदान किया।

दीपक कुमार

प्रभारी- AISHE समिति



वार्षिक रिपोर्ट संस्थागत विकास योजना प्रकोष्ठ (सत्र 2023-24)

संस्थागत विकास योजना प्रकोष्ठ द्वारा सत्र 2023-24 में महाविद्यालय हितों को ध्यान में रखते हुए नियमित समयांतराल पर अनेक बैठकों का आयोजन किया गया, जिनमें महाविद्यालय सम्बन्धित विकास एवं कार्याकल्प हेतु विभिन्न सुझाव प्रतिपादित किये गए, जिनमें से अधिकांश को सम्बन्धित समिति से विमर्श द्वारा धरातल पर उतारा गया। महाविद्यालय में हरित परिवेश का विकास, बालिका-शौचालयों का निर्माण, अतिरिक्त कक्ष की व्यवस्था, गर्ल्स कॉमन रूम की व्यवस्था, गर्ल्स जोन निर्माण आदि आधारभूत एवं प्रगतिशील कार्यों सम्बन्धित सुझावों में प्रकोष्ठ की विशेष भूमिका रही।

पठन-पाठन एवं अवलोकन के स्तर पर भी समिति द्वारा महाविद्यालय-व्यवस्था में उचित परिवर्तनों हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए। Slow एवं Advanced Learning हेतु अतिरिक्त कक्षाओं के संचालन हेतु शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं को प्रेरित किया गया। सतत् आन्तरिक मूल्यांकन व्यवस्था हेतु भी नयी नीति का मसौदा समिति द्वारा तैयार किया गया एवं प्रत्येक वर्ग एवं संकाय में सुचारु रूप से लागू कराया गया। छात्र-छात्राओं के हितों को ध्यान में रखते हेतु अन्य जरूरी परिवर्तनों हेतु सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं जिन पर अन्य समितियों से विचार-विमर्श किया जा रहा है।

प्रकोष्ठ द्वारा महाविद्यालय की शैक्षणिक उन्नति हेतु अनेक भविष्योन्मुख योजनाओं सम्बन्धित मसौदा सुधी प्रकोष्ठ सदस्यों यथा प्रो. ग्रीश चन्द्र यादव, डॉ. सर्वेश चन्द्र यादव, डॉ. श्रीमती रश्मि जिंदल, डॉ. अरुण यादव, शिवानी गोयल आदि द्वारा तैयार किया जा रहा है जिससे महाविद्यालय द्वारा दूरगामी लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु उचित कदम उठाये जा सकें।

दीपक कुमार

प्रभारी- संस्थागत विकास रिपोर्ट

उद्योग अकादमिक एकीकरण एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ वार्षिक रिपोर्ट (सत्र 2023-24)

भारत सरकार द्वारा जारी की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय की व्यवस्था के अनुसार, महाविद्यालय में सुचारु रूप से लागू की गई है। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी इसे लागू करने में उद्योग अकादमिक एकीकरण एवं कौशल प्रकोष्ठ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पूर्व के वर्षों में छात्र-छात्राओं को कम्प्यूटर तथा वाणिज्य सम्बन्धित अनेक औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमों को महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है तथा छात्र-छात्राओं को विशेष प्रयोगात्मक ज्ञान देने हेतु योग्य शिक्षकों एवं वक्ताओं को महाविद्यालय में समय-समय पर आमंत्रित किया जाता रहा है।

वर्तमान सत्र 2023-24 में भी विश्वविद्यालय द्वारा जारी किए गए पाठ्यक्रम के अनुसार छात्र-छात्राओं को कौशल विकास सम्बन्धी विषय चुनाव हेतु अनेक नवीन विकल्प सृजित किए गए हैं। वर्तमान सत्र में छात्र-छात्राओं हेतु में Vermicompost Green House Technology आदि नए विषयों की वैकल्पिक व्यवस्था प्रारम्भ की गई है। छात्र-छात्राओं के कौशल ज्ञान को निखारने हेतु महाविद्यालय ने दाऊदयाल महाविद्यालय के साथ संसाधन विनिमय MoU भी हस्ताक्षरित किया है जो इस तरह का महाविद्यालय द्वारा हस्ताक्षरित प्रथम MoU भी है। अकादमिक पाठ्यक्रमों से अलग समय-समय पर महाविद्यालय में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन भी कराया गया जिनमें उन्मुखीकरण कार्यक्रम, कार्यशालायें तथा विभिन्न दक्षता कार्यक्रम आदि सम्मिलित हैं।



भविष्य में भी महाविद्यालय नवीन अवसरों के सृजन के साथ विकास के नए आयाम तलाश कर रहा है। भविष्य में महाविद्यालय अन्य क्षेत्रीय शैक्षणिक/शिक्षता संस्थानों एवं रोजगारपरक संस्थानों के साथ नए MoU हस्ताक्षरित करने हेतु आशावादी है। वर्तमान सत्र 2023-24 में श्रीमती पूजा त्यागी, डॉ. हेमलता यादव, डॉ. रविन्द्र कुमार एवं डॉ. एस.पी. सिंह समिति में सक्रिय सदस्य हैं तथा समिति संबंधित कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

दीपक कुमार

प्रभारी- उद्योग अकादमिक एकीकरण एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ

NAAC समिति

महाविद्यालय NAAC संचालन समिति द्वारा सत्र 2023-24 में डाटा संग्रहण हेतु एक तंत्र तैयार किया गया है। समिति द्वारा विभिन्न प्रकार के फीडबैक फॉर्म यथा-शिक्षक फीडबैक फॉर्म, पुरातन छात्र फीडबैक फॉर्म आदि तैयार कर महाविद्यालय वेबसाइट पर प्रदर्शित किये गए हैं तथा उक्त के सापेक्ष डाटा संग्रहण का कार्य निरंतर गतिशील है। समिति द्वारा महाविद्यालय में आयोजित समस्त कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने एवं समापन पर विस्तृत रिपोर्ट संकलन हेतु तंत्र तैयार किया गया है। महाविद्यालय समिति द्वारा भविष्य में NAAC मूल्यांकन से सम्बन्धित बिन्दुओं का विस्तार से अध्ययन किया गया है तथा मूलभूत आवश्यकताओं हेतु समय-समय पर कार्यकारी बैठकों द्वारा महाविद्यालय प्रबंध समिति को भी अवगत कराया है। वर्तमान में श्री दीपक कुमार NAAC संचालन समिति के प्रभारी रूप में, डॉ. रश्मि जिंदल, डॉ. दीपिका चौधरी एवं कु. शिवानी गोयल NAAC संचालन समिति के सक्रिय सदस्य के रूप में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं।

लघु निर्माण एवं भवन अनुसरण समिति तथा विद्युत समिति की सत्र 2023-24 की रिपोर्ट

सम्माननीय प्राचार्य जी के कुशल मार्ग दर्शन में इस वर्ष महाविद्यालय में निम्न कार्य हुए।

- (1) मुख्य कार्यालय एवं प्रबन्धन समिति के कमरे का नवीनीकरण कराया गया है।
- (2) महाविद्यालय में बाहरी वाउण्ड्री, एन.सी.सी. ऑफिस एवं कम्प्यूटर विभाग की रंगाई पुताई करायी गयी है।
- (3) छात्र एवं छात्राओं के बैठने के लिए अलग-अलग पार्क तैयार कराये गये हैं।
- (4) छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ के लिए गंगाजल की सुचारू व्यवस्था की गयी है।
- (5) कॉलेज के मुख्य कार्यालय में उच्च गुणवत्ता में फर्नीचर को मंगाया गया है। छात्र-छात्राओं के फीस भरने के लिए बाहर खिड़की के पास एक प्लेटफॉर्म का निर्माण कराया गया है।
- (6) मुख्य कार्यालय की अलमारीयों की पेन्टिंग समिति द्वारा करायी गयी है।
- (7) आवश्यकतानुसार सभी फर्नीचर (मेज+कुर्सी) की मरम्मत करायी गयी है।

डॉ. सर्वेश चन्द्र यादव

प्रभारी- लघु निर्माण एवं विद्युत समिति

रसायन विज्ञान विभाग की 2023-24 की प्रगति रिपोर्ट

1- रसायन विज्ञान विभाग में छः प्राध्यापक कार्यरत हैं। सभी प्राध्यापक अपने-अपने कार्य का विधिपूर्वक एवं संतोषजनक निर्वहन कर रहे हैं। प्राध्यापकों एवं छात्रों का तालमेल संतोषजनक है छात्रों की प्रत्येक कठिनाई को विभाग हर समय दूर करने के लिए तत्पर रहता है। सभी प्राध्यापकों का मृदु व्यवहार छात्रों को प्रोत्साहित करता है।

2- विभाग में पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों की एक रोल (Postgraduate study and research council) गठित की गयी है



- जिसमें छात्र/छात्राओं को अनुसंधान परिषद से जोड़ा गया है तथा छात्र/छात्राएँ इसमें बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं।
- 3- विभाग में सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक कक्षाएँ समय से पूर्ण हो गयी हैं तथा छात्रों को यह भी निर्देश दे दिया है कि अगर किसी भी विषय से सम्बन्धित समस्या है तो वे प्राध्यापकों से मिलकर दूर कर सकते हैं।
 - 4- विभाग द्वारा छात्र/छात्राओं के हितों को देखते हुए Parent Teacher Meeting (PTM) का आयोजन भी किया जा रहा है।
 - 5- विभाग में उपस्थित सभी प्राध्यापक व शिक्षणेत्तर कर्मचारी महाविद्यालय में सही निर्धारित समय से उपस्थित होकर महाविद्यालय व विभाग की सभी गतिविधियों का पूर्णतः पालन कर रहे हैं।
 - 6- महाविद्यालय द्वारा M.Sc. (Final) Chemistry की छात्रा नेहा राठौर को Gold Medal दिया गया। उसने सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

रसायन विज्ञान विभाग के प्राध्यापकगण

1. प्रोफेसर जी.सी यादव (प्रभारी)
2. डॉ. श्रीमती रश्मि जिंदल
3. डॉ. हेमलता यादव
4. श्री दीपक कुमार
5. डॉ. प्रदीप जैन
6. डॉ. संजय सिंह

भौतिक विज्ञान-विभाग की 2023-24 की प्रगति रिपोर्ट

भौतिक विज्ञान विभाग में उच्च प्रशिक्षित एवं अनुभवों के शिक्षक हैं जो अपने विषय की गहन जानकारी रखते हैं जिन्होंने उच्च गुणवत्ता वाले संस्थानों से शिक्षा ग्रहण की है। जो निम्नवत है।

- (1). डॉ. सर्वेश चन्द्र यादव (विभागाध्यक्ष/प्रभारी)
- (2). श्री हवा सिंह
- (3). श्रीमती पूजा त्यागी
- (4). डॉ. रवेन्द्र कुमार
- (5). डॉ. दीपिका चौधरी

भौतिक विज्ञान विभाग में सभी कक्षाएँ सुचारू रूप से संचालित की जाती हैं तथा सभी सेमिस्टर की आन्तरिक परीक्षा कराकर मूल्यांकन हो चुका है, सभी छात्र-छात्राओं को विधिवतः प्रैक्टिकल कराकर नोट बुक का मूल्यांकन कर दिया है। भौतिक विज्ञान की प्रयोगशाला में NEP 2020 के अनुरूप उच्च गुणवत्ता के उपकरण उपलब्ध है तथा कुछ उपकरण इस सत्र में मंगाये गये हैं।

भविष्य में NEP 2020 के अनुरूप और भी उपकरण मंगाये जायें तथा आवश्यकता पड़ने पर पुराने उपकरणों की मरम्मत भी करायी जायेगी। छात्र हित में सभी प्राध्यापक छात्रों की समस्या के निस्तारण हेतु हर सम्भव उपलब्ध रहते हैं।



भौतिक विज्ञान विभाग के शोधकार्य भी डॉ. सर्वेश चन्द्र यादव द्वारा कराया जाता है। तथा डॉ. रवेन्द्र कुमार व डॉ. दीपिका चौधरी को भी विश्वविद्यालय द्वारा सुपरवाइजर बनाया गया है अभी भौतिक विज्ञान विभाग में दो छात्र शोधकार्य कर रहे हैं। विभागाध्यक्ष द्वारा निम्न बुक में रूपान्तरण किया है।

- (1). Thermodynamics and Kinetic theory of Gases
- (2). Basic Mathematics in Physics
- (3). Electrocity and Magnetism
- (4). Introduction of Nuclear Physics

कुछ शोध पत्रों को प्रकाशित कराने हेतु उन पर काम किया जा रहा है।

जन्तु विज्ञान की सत्र 2023-24 की प्रगति रिपोर्ट (आख्या जन्तुविज्ञान)

जन्तु विज्ञान में निम्न प्राध्यापक कार्यरत है:

1. डॉ. एस.पी.सिंह (प्रभारी)
2. डॉ. कुबेर सिंह

जन्तु विज्ञान विभाग के सभी प्राध्यापकों द्वारा कक्षाएँ सुचारू रूप से संचालित की जा रही है तथा आन्तरिक परीक्षा कराकर मुल्यांकन भी हो चुका है। जन्तु विज्ञान विभाग की प्रयोगशाला में अच्छी गुणवत्ता के उपकरण उपलब्ध है। तथा NEP 2020 के अनुसार उपकरण और रसायन पदार्थ भी मंगाये जा चुके हैं।

भविष्य में NEP के अनुसार प्रयोगात्मक उपकरण/रसायन पदार्थ मंगाये जाते रहेंगे। सभी प्राध्यापकों द्वारा छात्र/छात्राओं को अधिकतम प्रैक्टिकल कराये गये हैं।

सभी छात्र/छात्राओं की प्रयोगिक NOTEBOOK का निरीक्षण लिखित रूप में हो गया है।

वनस्पति विज्ञान की सत्र 2023-24 की प्रगति रिपोर्ट (आख्या वनस्पति विज्ञान)

वनस्पति विज्ञान विभाग के सभी प्राध्यापकों द्वारा थ्योरी एवं प्रैक्टिकल कक्षाएँ सुचारू रूप से संचालित की जा रही है तथा आन्तरिक परीक्षा कराकर मुल्यांकन भी हो चुका है।

विभाग में सभी प्राध्यापक निर्धारित समय से उपस्थित होकर विभाग की सभी गतिविधियों का पूर्णतः पालन कर रहे हैं।

Report of Commerce Department Session 2023-24

The department of commerce was started in 2015 offering undergraduate course B.Com, and the Post graduate Course M.com is going to college. We have a competent faculty member with Blending Knowledge and responsibility which has enriched the performance of the students.

Activities of the Department

in order to enrich the students with knowledge and skills, essential to meet the challenges and reveal them in today's fiercely competitive global bussiness Environment. Provide internship & industries Training. The Department offers job-oriented courses like Tally, Computer Accounting, Management Games & Farewell to seniors.



Extension Activities:

Our Staff members conducted special classes for higher secondary students in surrounding villages

Best Practices:

The department provides opportunities for students to exhibit their managerial talent by participating in various competitions

Display of newspaper cuttings for job opportunities in various fields

Students serve rural people to fill out Bank challans and Applications in the Bank.

Students collected small entrepreneurs' excellence from various fields

Future Plans:

To develop students for a professional career in accounting, finance, research and higher education.

To organize international seminars/conferences and guest lectures

To develop a department library

To motivate students to participate in skill development programs

To organize seminars/workshops for entrepreneurial development among the students

To organize Placement cell

Faculties:

Dr. Arun Kumar Yadav (Incharge)

Dr. K.K. Singh (M.Com, Ph.D)

Assistant Professor

Dr. Rahul Chaturvedi (M.Com, Ph.D)

Assistant Professor

Report of Computer Science Department Session 2023-24

This college is one of the premier & best institutions in Firozabad & Dr. B.R. Ambedkar University, Agra. The Goal of providing innovative and quality education with high standards to Computer Science. The department has well qualified and eminent and professionally to achieve a successful career in industry, Research and Academics.

The computer Science department has excellent infrastructure, well-equipped laboratories, and department library with a good collection of books, magazines and journals to ensure quality education. Innovative methods of teaching and learning process are adopted to achieve learning abilities through practice, exposure and motivation. For the overall development of students. Students participate in various activities to gain knowledge and interact with students and staff of other top colleges in Dr. B.R. Ambedkar University, Agra. Department also conducts student activities to improve their leadership qualities and technical skills.

Faculty are also provided with a platform to upgrade their academic and technical skills by encouraging them to enhance their qualifications and also learn new technologies by participating in FDP's, workshops, conferences and seminars. The department effectively implements the cultural program and Government program like National Youth Day, PM-USHA program, PM direct Conference & Guidelines given by the government.

The Department offers job-oriented courses like Programming Language Courses, CCC and Computer Basic Course, DTP Course etc.

Extension Activities:

Our Staff members conducted special classes for weak students

Best Practices:

The department provides opportunities for students to exhibit their managerial talent by participating in various competitions

Display of newspaper cuttings for job opportunities in various fields

Future Plans:

To develop students for a professional, Technical Field, Software Field, Research and higher education.

To organize international seminars/conferences and guest lectures

To develop a department library.

To motivate students to participate in skill development programs.

To organize seminars/workshops for entrepreneurial development among the students.

To organize Placement cell.

I feel it as a privilege to lead this department and also congratulate the faculty and students for their excellent performance. I will put all my efforts and give my best for the overall development of the department.

The Department of Computer Science is a center of excellence providing in-depth technical knowledge and opportunities for innovation and research with up-to-date computer facilities.

It has grown by leaps and bounds over the last two decades in terms of infrastructure, courses and faculty. The department started B.Sc Computer Science course in the year 1999.

Faculties:

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| 1. Dr. Arun Kumar Yadav | (Incharge) |
| 1. Mr. Sharukh Husain | (M.Sc Computer Science) |
| Assistant Professor | |
| 2. Mr. Tinkel Jain | (M.Sc Computer Science) |
| Assistant Professor | |
| 3. Mr. Umesh Kumar | (M.Sc Mathematics) |
| Assistant Professor | |

Report of Mathematics Department Session 2023-24

The Department of Mathematics has five faculty members, namely Dr. Usha Singh, Dr. Uday Raj Singh, Ms. Shivani Goel, Mr. Rahul Kumar and Mr. Umesh Kumar. All faculty members maintain excellent relationships with both colleagues and students, fostering an encouraging and supportive environment. In accordance with the National Education Policy (NEP), all semester books have been published. by Dr. Usha Singh and Dr. Uday Raj Singh and also have made notable contributions to various publications. At the university level, M.Sc. Mathematics final student Ms. Kajal Jain was awarded by two gold medals for achieving the highest marks in the Mathematics, highlighting the department's academic excellence. The department ensures that students receive a comprehensive education, balancing theoretical knowledge with practical application. Faculty members are readily available to address any subject-related issues that students may encounter, providing solutions in collaboration with the students. Currently, numerous students are engaged in extensive research in various mathematics topics. Over 100 research papers have been published in both national and international journals, showcasing the department's dedication to academic. At present four researchers are doing research in Mathematics and this year the thesis has been submitted by one researcher Mr. Rahul Kumar under the guidance of Dr. Uday Raj Singh.

This report encapsulates the department's dedication to fostering a robust academic environment, encouraging research, and maintaining strong faculty-student relationships.



महाविद्यालय शिक्षक मण्डल

प्रोफेसर (डॉ.) वैभव जैन - प्राचार्य

पी-एच.डी, एम.फिल.
नैट, गेट, एल. एल. बी.
एम. बी.ए.

रसायन विज्ञान विभाग

- | | |
|-------------------------------|-------------------------------|
| 1. डॉ. जी.सी. यादव | प्रोफेसर |
| 2. डॉ. (श्रीमति) रश्मि जिन्दल | असिस्टेंट प्रोफेसर |
| 3. डॉ. हेमलता यादव | असिस्टेंट प्रोफेसर |
| 4. श्री दीपक कुमार | असिस्टेंट प्रोफेसर |
| 5. डॉ. प्रदीप जैन | असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित) |
| 6. डॉ. संजय सिंह | असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित) |

भौतिक विज्ञान विभाग

- | | |
|---------------------------|--------------------|
| 1. डॉ. सर्वेश चन्द्र यादव | असिस्टेंट प्रोफेसर |
| 2. श्री हवा सिंह | असिस्टेंट प्रोफेसर |
| 3. श्रीमती पूजा त्यागी | असिस्टेंट प्रोफेसर |
| 4. डॉ. रविन्द्र कुमार | असिस्टेंट प्रोफेसर |
| 5. डॉ. दीपिका चौधरी | असिस्टेंट प्रोफेसर |

गणित विभाग

- | | |
|---------------------------|--------------------|
| 1. डॉ. (श्रीमती) ऊषा सिंह | एसोसिएट प्रोफेसर |
| 2. डॉ. उदय राज सिंह | प्रोफेसर |
| 3. शिवानी गोयल | असिस्टेंट प्रोफेसर |
| 4. श्री राहुल कुमार | असिस्टेंट प्रोफेसर |

शारीरिक शिक्षा विभाग

- | | |
|--------------------|------------------|
| 1. डॉ. मुकेश चौधरी | एसोसिएट प्रोफेसर |
|--------------------|------------------|

जन्तु विज्ञान विभाग

- | | |
|---------------------|-------------------------------|
| 1. डॉ. कुबेर सिंह | असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित) |
| 2. डॉ. एस. पी. सिंह | असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित) |

वनस्पति विज्ञान विभाग

- | | |
|---------------------|-------------------------------|
| 1. डॉ. एस. पी. सिंह | असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित) |
| 2. छवि जादौन | असिस्टेंट प्रोफेसर (अस्थायी) |

वाणिज्य विभाग

- | | |
|------------------------|-------------------------------|
| 1. डॉ. अरुण यादव | असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित) |
| 2. डॉ. के.के. सिंह | असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित) |
| 3. डॉ. राहुल चतुर्वेदी | असिस्टेंट प्रोफेसर (अस्थायी) |



कम्प्यूटर विभाग

- | | |
|-----------------------------|-----------------------------------|
| 1. डा. अरुण यादव (इन्चार्ज) | असिस्टेंट प्रोफेसर (अनुमोदित) |
| 2. मि. टिवंकल जैन | असिस्टेंट प्रोफेसर (अस्थायी) |
| 3. मि. उमेश कुमार | असिस्टेंट प्रोफेसर (अस्थायी) |
| 4. मि. शाहरूख हुसैन | कम्प्यूटर लैब असिस्टेंट (अस्थायी) |

महाविद्यालय शिक्षणेत्तर मण्डल

- | | |
|-----------------------------|--|
| 1. श्री अचिन्त कुमार यादव | कार्यालय अधीक्षक |
| 2. श्रीमती कमला देवी | नैतिक लिपिक |
| 3. श्री पूरन सिंह ब्रजवासी | नैतिक लिपिक |
| 4. श्री अमर सिंह | प्रयोगशाला परिचर (रसायन विज्ञान) |
| 5. श्री परमानन्द | कार्यालय परिचर |
| 6. श्री सन्तोष कुमार | जमादार |
| 7. श्री जितेन्द्र पाल सिंह | बिजली मिस्त्री सह मैकेनिक |
| 8. श्रीमती रेनु बघेल | प्रयोगशाला परिचर (रसायन) |
| 9. श्री ऋषि शर्मा | प्रयोगशाला परिचर (भौतिक विज्ञान) |
| 10. श्री शंकर गुप्ता | नैतिक लिपिक (अस्थाई) |
| 11. श्री अंकुश गुप्ता | कम्प्यूटर ऑपरेटर (अस्थाई) |
| 12. श्री अभय शर्मा | पुस्तकालय परिचर लिपिक (अस्थाई) |
| 13. श्री अरवेन्द्र सिंह | प्रयोगशाला परिचर (जंतु विज्ञान) (अस्थाई) |
| 14. श्री लोकेश मिश्रा | प्रयोगशाला परिचर (रसायन विज्ञान) (अस्थाई) |
| 15. श्री नवीन कुमार | माली (अस्थाई) |
| 16. श्रीमती उर्मिला देवी | कार्यालय परिचर (अस्थाई) |
| 17. श्री विनोद कुमार शंखवार | कम्प्यूटर लैब परिचर (अस्थाई) |
| 18. श्री विनोद कुमार | चौकीदार (अस्थाई) |





Physics Department



Physics Lab



Chemistry Department



Chemistry Lab



Math Department



डिग्री वितरण समारोह



MOU



MOU

Zoology+Botony Department



Zoology Lab



Commerce Department



Botony Lab



Computer Science Department



Computer Science Lab



Kaushal Vikas Department



Kaushal Vikas Lab



एकदिवसी रोमिनार



शहीद मार्ग



पुस्तकालय एवं वाचनालय



विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण



मिस्टर फेयट्वेल वने विटाग व मिस् फेयट्वेल स्वशी



शहीद मार्ग



वन महोत्सव सप्ताह में पौधारोपण



पुस्तकालय एवं वाचनालय



